छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
हिन्दी मासिक मुख पत्र
मास-चैत्र-बैसाख, संवत् 2072-73
अप्रैल 2016

अंक 128, मूल्य 10

अग्निदूत

अग्निं दूतं वृणीमहे. (ऋग्वेद)

चैत्र प्रतिपदा, नववर्ष विक्रमी सम्वत् 2073
आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं रामनवमी की
समस्त आर्यजनों एवं सहृदय पाठकों को
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से
हार्दिक शुभकामनायें व बधाईयाँ

महाशय धर्मपाल जी (एमडीएच)
को 93 वाँ जन्मदिवस की
हार्दिक शुभकामनायें

सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, महाशय धर्मपाल जी सभा मंत्री दीनानाथ वर्मा, उपप्रधान दयाराम वर्मा

नव संवत हो मंगलकारी

नव संवत हो मंगलकारी, जन-जन में आये सद्बुद्धि ।
परहित के भावों की मन में, हो सहसा अभिवृद्धि ।
मंगलमय हो नव संवत्सर, मंगलमय हो घर आंगन ।
मंगलमय हो इस धरती का, सत्य-शिवम्-सुन्दर सा कन-कन ।
आज हमारे अन्तस्थल में, प्रेमभाव हो पुनः प्रदीप्त ।
करुणा-क्षमा-सहिष्णुता हो, अन्तर्मन में फिर उद्दीप्त ।
भाव शत्रुता के मिट जायें, उर में आगे मिक्ष भावना ।
पूर्ण सदा हो मानव की, इच्छा के अनुकूल कामना ।
राम-कृष्ण की, दयानन्द की, परम्परा हो फिर से जीवित ।
करें परस्पर स्वच्छ हृदय से, एक दूसरे का ही हम हित ।
मिट नये इस संवत्सर में, फैला जो अन्याय-अनय ।
सभी दिशायें हो मंगलमय, जन-जन हो वसुधा पर निर्भय ।
मानवता के मंगलकारी, पथ पर ही अब बढ़े चरण ।
सच्चरित्रता का ही हम सब, जीवन पथ पर करें वरण ।
भ्रष्टाचार मिटे, जिसने है, किया राष्ट्र को बहु आक्रांत ।
जागृति का नव मंत्र मिले अब, जागे मानव-मन उदभ्रान्त ।
रुदन मिटे इस वसुन्धरा का, छा जाए कुल हर्षोल्लास ।
स्वार्थवाद को दिए तिलांजलि, जगे धरा पर नूतन आश ।
मानवता की जय का डंका, बजे पुनः भूमण्डल पर ।
जन-जन हित हो मंगलकारी, आया जो नवसंवत्सर ।

स्व. राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति, मुसाफिरखाना, सुलतानपुर (उ.प्र.)

अग्निदूत

हिन्दी मासिक

राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, राजनीतिक विचारों की मासिक पत्रिका

विक्रमी संवत् – २०७२-७३
सृष्टि संवत् – १,९६,०८,५३,११७-१८
दयानन्दाब्द – १९२-९३

: प्रधान सम्पादक :
आचार्य अंशुदेव आर्य
प्रधान सभा
(मो. ०७०४९२४४२२४)

★

: प्रबंध सम्पादक :
आर्य दीनानाथ वर्मा
मंत्री सभा
(मो. ९८२६३६३५७८)

★

: सहप्रबंध सम्पादक :
श्री जोगीराम आर्य
कोषाध्यक्ष सभा
(मो. 9977152119)

★

: व्यवस्थापक :
श्री दिलीप आर्य
उपमंत्री (कार्यालय) सभा
मो. ९६३०८०१२५७

★

: सम्पादक :
आचार्य कर्मवीर
मो. ९७५२३८८२६७

पेज सज्जक : श्रीनारायण कौशिक
प्रबधंक : श्री रामेश्वर प्रसाद यादव

– कार्यालय पता –
छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा
दयानन्द परिसर, आर्य नगर, दुर्ग (छ.ग.)४९१ ००१
फोन : (०७८८) ४०३०९७२
फैक्स नं. : ०७८८-४०११३४२ ;
e-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com

वार्षिक शुल्क - १००/- दसवर्षीय-८००/-

वर्ष – ११, अंक १० | ओ३म् | मास/सन् – अप्रैल – २०१६

श्रुतिप्रणीत–सिद्धधर्मवह्निरूपतत्त्वकं,
महर्षिचित्त–दीप्त वेद–सारभूतनिश्चयं।
तदग्निसंज्ञकस्य दौत्यमेत्य सद्मसद्मकम्,
सभाग्निदूत–पत्रिकेयमादधातु मानसे।।

विषय – सूची

			पृष्ठ क्र.
१.	वेदामृत : ऐसा विद्वान् गुरु हमें मिलें	स्व. डॉ. रामनाथ वेदालङ्कार	०४
२.	सम्पादकीय : दयानन्द की अद्‌भूत क्रान्ति	आचार्य कर्मवीर	०५
३.	वेदप्रचार की दुन्दुभि	डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह	०८
४.	घर के अन्दर बैठे आतंकियों का क्या होगा ?	शिवदेव आर्य	१०
५.	आर्यसमाज में संख्यात्मक नहीं गुणात्मक विकास की आवश्यकता	मनुदेव अभय विद्यावाचस्पति	१३
६.	विद्युत और आत्मा	श्री अजय शर्मा	१६
७.	कविता – "अस्तु जियो मर्यादित जीवन"	दयाशंकर गोयल	१९
८.	"वैदिक धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने वाले अन्य मतों के अनुयायी"	मनमोहन कुमार आर्य	२०
९.	ग्रीष्मऋतु चर्या	डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय	२२
१०.	डी.ए.व्ही. के संस्थापक : महात्मा हंसराज	लोचन कुमारार्य	२४
११.	हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान गाथा	विश्वनाथ	२५
१२.	घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल	अर्जुन देव चड्ढा	२७
१४.	मोटापा और होमियोपैथी चिकित्सा	डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी	३०
१२.	समाचार दर्पण		३१

सूचना : छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा का अणुसंकेत
(ई-मेल) E-mail : chhattisgarhsabha@gmail.com
(सम्पादक) E-mail : shastrikv1975@gmail.com

सूचना : हमारा नया वेब साइट देखें
Website : http:/www.cgaryapratinidhisabha.com

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है।

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक – आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया।

ऐसा विद्वान् गुरु हमें मिलें

वेद वेदामृत

भाष्यकार - स्व. डॉ० रामनाथ वेदालङ्कार

सं. पूषन् विदुषा नय, यो अञ्जसानुशासति।
य एवेदमिति ब्रवत्॥ ऋग्. ६.५४.०१

ऋषिः **भरद्वाजः बार्हस्पत्यः** । देवता **पूषा** । छन्दः **गायत्री** ।

● **(पूषन्)** हे पूषा देव ! हे पुष्टिदाता परमात्मन् ! (तुम हमें) **(विदुषा)** (ऐसे) विद्वान् से **(संशय)** संयुक्त कराओ, **(यः)** जो **(अञ्जसा)** ऋजु मार्ग से, शीघ्र **(अनुशासति)** शास्त्रोपदेश करे (और) **(यः)** जो **(एव इदं)** ऐसा ही है यह **(इति)** इस प्रकार (निश्चयात्मक रुप से) **(ब्रवत्)** कह सके।

हे पूषा परमात्मन् ! तुम पुष्टि के देव हो। शारीरिक, आर्थिक आदि अन्य पुष्टियों के समान तुम हमें विद्या की पुष्टि भी प्रदान करते हो। इस विद्या की पुष्टि के लिए तुम किन्ही विद्वानों को माध्यम बनाते हो। बालक को अध्ययन के योग्य आयु हो जाने पर माता-पिता द्वारा आचार्याधीन वास करने के लिए गुरुकुल में भेज दिया जाता है, जहां वह गुरुजनों के सान्निध्य में रहता हुआ विद्यार्जन करता है। गुरुकुल से स्नातक बन जाने के बाद भी उसके जीवन में अनेक विद्वान् आते हैं, जिनसे वह ज्ञान-ग्रहण करता है। हम चाहते हैं कि तुम्हारी कृपा से हमें ऐसा उच्च कोटि का विद्वान् गुरु प्राप्त हो, जो शिक्षण और उपदेश की कला में पूर्ण निष्णात हो। उसमें वह गुण हो कि वह जटिल से जटिल विषय को ऋजु मार्ग से, सरल शैली से, हृदयंगम करा सके। वह कठिन से कठिन शास्त्रीय सन्दर्भों को कथाओं, दृष्टान्तों आदि के माध्यम से सुबोध बनाकर प्रस्तुत कर सके, जैसा उपनिषदों के ऋषि करते हैं। वह उन शिक्षकों के समान न हो, जो स्वयं तो शास्त्र के पण्डित होते हैं, पर श्रोता को विषय का बोध नहीं करा सकते। जो विद्वान् गुरु हमें मिले उसकी शिक्षण की गति भी तीव्र और शीघ्रता-युक्त हो, जिससे अल्प समय में अधिक से अधिक विद्या का ग्रहण करा सके। अन्यथा स्वल्प आयु में अनन्त शब्द-शास्त्र में से थोड़े अंश का भी अध्ययन दुष्कर है।

जो विद्वान् तुम हमें प्राप्त कराओ उसका ऐसा चूड़ान्त पाण्डित्य हो कि वह किसी भी गूढ़ से गूढ़ विषय की व्याख्या करते हुए निश्चयात्मक रुप में यह कह सके कि इसका अभिप्राय यही है। वह संशयों से घिरा न हो। न केवल वह शास्त्रीय विषयों के शिक्षण में पटु हो, किन्तु योग-विधि द्वारा जिज्ञासु हो ब्रह्म-साक्षात्कार कराता हुआ भी ब्रह्म की हस्तामलकवत् 'ऐसा ही है, यही है', इस प्रकार प्रत्यक्ष अनुभूति करा सके, जैसे नचिकेता को उसका आचार्य यम "एतद् वै तत् (यही है वह)" इस प्रकार कहता हुआ ब्रह्म का प्रत्यक्ष कराता है। हम जानते है कि ऐसे विद्वान् गुरु बिरले ही होते हैं, पर हे पूषन् ! तुम ऐसा ही विद्वान् आचार्य और उपदेशक प्रदान करके हमें 'अपरा' और 'परा' विद्या के ज्ञान और अनुभव से पूर्णतः परिपुष्ट कर दो।

संस्कृतार्थ :- १. अञ्जसा ऋजुमार्गेण (सायण) शीघ्र (अमर ३.४.२), २. अनुशासित अनुशस्ति। शासु अनुशिष्टौ, ३. एव एवम् (निरु. २.१९) । ४. ब्रजू व्यक्तायां वाचि, लेट्। ५. कठ, उप, बल्ली ४-६ ।

सम्पादकीय

दयानन्द की अद्भुत क्रान्ति

विश्व द्वन्द्वमय है, जो समयरुपी चक्र द्वारा चलता रहता है। समय बदलता है, युग बदलते हैं, एवं परिस्थितियों में परिवर्तन आता है, जिसका आधार विश्व की दो विरोधी शक्तियों का संघर्ष है। विश्व का इतिहास ज्ञान एवं अज्ञान, परोपकार एवं स्वार्थ तथा भ्रष्टाचार एवं सदाचार के संघर्ष की एक लड़ी है। विश्व में दुर्गुणों के प्रकोप के निवारणार्थ युगातन्तरकारी परिवर्तन लाने वाली शक्तियां ही 'क्रान्ति' का निर्माण करती है। क्रान्ति सभ्यता की जननी है। नेपोलियन के शब्दों में 'Revolutions are like the most noxious dung-heaps which bring into life the noblest vegetables' अर्थात् 'क्रान्ति' अतिहानिकारक कूड़े के सदृश होती है, जिससे अति उत्तम वानस्पतिक पैदावार होती है। जिन विभूतियों के माध्य से युग बदलता है, विचार बदलते हैं, भावनाएं बदलती है एवं इतिहास एक नया मोड़ लेता है, उन्हें क्रान्तिकारी कहते हैं। प्रत्येक क्रान्तिकारी अपने युग का प्रवर्तक होता है, जिसका आविर्भाव देश एवं काल के हृदय में सन्निहित अनुभूति की अभिव्यजंना के लिए होता है। रुस में लेनिन तथा क्रोपाटकिन एवं जर्मनी में मार्क्स आदि क्रान्तिकारियों ने अपने-अपने राष्ट्र में युगान्तरकारी परिवर्तन किये। भारतीय संस्कृति का इतिहास क्रान्तियों का इतिहास है। ऐसे ही युग-प्रवर्तक क्रान्तिकारियों में महर्षि दयानन्द एक मुख्य युगान्तरकारी महामानव हुए हैं।

वह क्रान्तिकारी दयानन्द ही था जो धर्मान्धों के मनमाने-प्रहार, विपत्तियों, बाधाओं एवं संघर्षों में कुन्दन की भान्ति तेजोमय आलोक बन निकला। वह दयानन्द ही था, जो जहरीले सांप से मरा नहीं, गुण्डों से डरा नहीं, वेश्या के आकर्षण में फंसा नहीं, विष से वह भयभीत नहीं हुआ। उसने विष पीकर भी अमृतवाणी की वर्षा की। जनता से अपमान-तिरस्कार सह कर भी वह मुस्करा दिया। वह दयानन्द ही था, जिसने धर्म के नाम पर दुर्गुणों को पनपने न दिया। वह दयानन्द ही था, जिसने नारी को जननी एवं भगिनी कह कर दुराचरण एवं कुत्सित विचारों को तिलांजलि देने के लिए प्रेरित किया। वह दयानन्द ही था, जो जीवन-यौवन को ब्रह्मचर्य-रुपी

कठोर बन्धन में बांधकर मठो मन्दिरों एवं धार्मिक स्थलों में भटकता रहा। वह क्रान्तिकारी दयानन्द ही था, जिसने तत्कालीन विभिन्न धर्मावलम्बियों में पारस्परिक-वैमनस्य, ईर्ष्या-द्धेषादि दुर्गुणों के निवारणार्थ लोगों को धर्मात्माओं के गुणों से अवगत कराया एवं मानव-मन में क्रान्ति के भाव उत्पन्न किये।

सम्वत् १८८१ वि. में मौर्वी राज्य के टंकारा नामक स्थान में दयानन्द का प्रादुर्भाव हुआ, मानो धर्माडम्बरों से पीड़ित मानवता के लिए स्वर्णिम-प्रभात का उदय हुआ है। उस समय चरणी अभिशापों से दग्ध थी। पाशविक मनोवृत्ति का नग्न नृत्य हो रहा था, व्यथित विधवाओं का हाहाकार था। सत्य धर्म का दिवाकर साम्प्रदायिक-राहु द्धारा ग्रसा जा चुका था। आर्यों की वैदिक-कालीन स्वर्णमय आचार-विचारों से समावृत सभ्यता अर्वाचीन-चक्र की चाञ्चल्यपूर्ण गति से धूसरित हो रही थी। ऐसे में अवतारवाद, तीर्थों एवं पौराणिक अनुष्ठानों का विरोध कर वैदिक-संस्कृति की पताका फहराने वाला कौन था ? कौन था वह क्रान्तिकारी जिसने कहा था - **'जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है ?'** अछूतोद्धार, स्वराज्य एवं खादी के विचारों का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव हुआ, तो किसमें ? 'आर्यसमाज एवं गो-रक्षा आन्दोलन' की स्थापना कर क्रान्ति की दुन्दुभि बजायी तो किसने ? निःसन्देह ऋषि दयानन्द ने ही।

ऋषि दयानन्द 'क्रान्ति' के तेजपुन्ज वैदिक-संस्कृति के अमर वैतानिक, सत्यपथ के चिर-पथिक, तर्क के महान् भण्डार, राष्ट्र के अजस्र-प्रकाश, भातृभाव के सन्देशवाहक, प्रभावोत्पादक, उपदेष्टा, हिन्दुत्व के सच्चे उपासक, नवीनता के प्रचारक, योद्धा-संन्यासी, युग-प्रवर्तक एवं आग्नेय महापुरुष थे। वे निर्बलों, दीन-दुखियों, अनाथों एवं अपाहिजों की रक्षा के प्रति सहानुभूति प्रकट करने में 'क्राइस्ट' भ्रातृ-भाव एवं एकेश्वरवाद के सन्देशवाहक, ईश्वर-यशोगान में कबीर एवं रामदास तथा आर्यत्व की रक्षा करने में गुरु गोविन्द सिंह, शिवाजी एवं प्रताप के प्रतीक थे। सब गुणों में समन्वित दयानन्द में विचारों की पावनता, भावों की विशालता, चरित्र की उदारता का बाहुल्य था।

तत्कालीन राजामोहनराय, केशवचन्द्र एवं रानाड़े में तो ऋषि के आदर्शों का अंशमात्र ही विद्यमान था। रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग में आगे। आदर्श राष्ट्र-निर्माण, मानवीय तत्वों की अनिवार्यता का प्रदर्शन ही आपके जीवन का सार था। उनके द्धारा रचित सत्यार्थ प्रकाश इसका प्रतीक है। मानव-समाज के चरित्रहीनता रुपी विष के पनपते हुए फोड़े को अपने कुशल-वैद्य की भांति सत्यार्थ प्रकाश, संस्कार-विधि, आर्याभिविनय, वेदान्त-ध्वान्त-निवारण, व्यवहारभानु आदि उपकरणों द्धारा चीरकर हिन्दु-समाज को स्वरुप प्रदान किया। सत्यार्थ-प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में ब्रह्मचर्य, गृहस्थाश्रम-व्यवहार, ओंकार आदि नामों की व्याख्या, आचार-अनाचार एवं विद्या-अविद्या आदि तत्वों की विस्तृत व्याक्या एवं उतरार्द्ध के चार

समुल्लासों में आर्यावर्तीय मत-मतान्तरों का खण्डन-मण्डन एवं ईसाई तथा मुसलमानों के धर्मों की आलोचना क्रान्ति की रीढ़ सिद्ध हुई। ऋषि दयानन्द वैदिक-संस्कृति के पंख थे। उन्होंने उसे उड़ाकर विश्व-सभ्यताओं की दौड़ में उपस्थित किया। आपका सम्पूर्ण क्रान्तिमय जीवन मानों विश्व की अन्य संस्कृतियों की असारता को चुनौती दे रहा है। उदाहरणार्थ **तत्र, हिंसासत्यास्तेय-ब्रह्मचर्यापरिग्रहा यमाः मनुस्मृति** (अ.४,२०४) के '**यमान् सेवेत सततं न नियमान् तु केवलान्**' की व्याख्या के प्रसंग में सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में योग. साधनापाद सू. ३० को उद्धृत करके स्वामी जी मानव-ग्राह्य तत्वों का उल्लेख करते हुए क्रान्तिकारी विचारों को उपस्थित करते हैं - "अहिंसा , वैर-त्याग, सत्य बोलना, अस्तेय अर्थात् मन-वचन में चोरी का त्याग, ब्रह्मचर्य अर्थात् उपस्थेन्द्रिय का संयम, अपरिग्रह अर्थात् अत्यन्त लोलुपता और स्वत्वाभिमान से रहित होना- इन पांच यमों का सदैव सेवन करें।" आपकी क्रान्ति का आधार दुर्गुणों एवं अन्याय के त्याग में निहित है। आपने अन्यायकारियों को चुनौती एवं जन-जन को चेतावनी दी - "अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें, इस काम में चाहे प्राण भले ही जावें, परन्तु इस मनुष्यतम् रुप धर्म से कभी पृथक् न होवें।"

निःसन्देह आप **न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः** के प्रतीक थे। "रुग्ण हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई न हुआ।" आप आग पर चले एवं दीप-सम जले। 'ऋषि' नियतिवाद के विरोधी एवं कर्मानुसार वर्णव्यवस्था तथा स्त्रियों के पुरुषों के समान अधिकारों के पक्षपाती थे। आपने बाल-विवाह, मूर्तिपूजा एवं गौवध के अनौचित्य का प्रतिपादन समाजरुपी युद्धस्थल में गंभीर गवेषणा, अकाट्य युक्तियों एवं तर्करुपी बाणों द्वारा किया। हिन्दुधर्मोद्यान में सद्गुण रुपी पादप-समूह के समीचीन वार्धक्यार्थ आपने आडम्बर रुपी झाड़-झंखाड़ों का कुशल एवं सतर्क माली की भांति मूलोन्मूलन किया। इस भांति आप युग-प्रवर्तक सिद्ध होते हैं।

श्री सत्यकाम विद्यालंकार के शब्दों में हम कह सकते हैं - "भारत के युग-प्रवर्तकों में दयानन्द का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने जनता की विचारधारा में अत्यन्त क्रान्तिकारी परिवर्तन किया।" आपने सविता के समान अपनी भाव-रश्मियों से मानवता के भुवन को आलोकित किया। आपके द्वारा उत्साह-हीनों को उत्साह, पतितों को आत्म-बल, निरुद्यमियों को स्फुरणा, अज्ञानियों को ज्ञान, अन्धों को ज्योति प्राप्त हुआ। निःसंदेह ऋषि की क्रान्ति अद्भुत थी, बहुमुखी थी एवं सर्वांगीण थी। आपकी क्रान्ति सामाजिक थी, धार्मिक थी, राष्ट्रिय थी, मानवीय थी। वह वैदिक संस्कृति के पुनरुत्थान की द्योतक एवं ऋषि की महत्ता की परिचायक थी। सुप्रसिद्ध विचारक श्री वी.के. मुन्शी ने ठीक कहा है - "विरोध की लपटों के अन्तराल में भी उन्होंने प्रगतिशील, क्रान्तिकारी विचारधाराएँ, समाज को परिवर्तित करने के लिए उपस्थित की और इस दृष्टि से स्वामी दयानन्द क्रान्तिकारी हैं।"

- आचार्य कर्मवीर

विचारात्मक

वेद प्रचार की दुन्दुभि

- डॉ. बिजेन्द्रपाल सिंह

वेद प्रचार की दुन्दुभि सदैव बजती रहेगी न रुकी है न कभी रुकेगी। बहुत से नये कार्यकर्त्ता आर्यसमाजों में आते जाते हैं, उनमें से अनेक सज्जन तो स्वाध्याय कर अपने आप को आर्यत्व के रंग में ढाल लेते हैं। अनेक नहीं ढाल पाते हैं, अनेक सोचते हैं कि हमें आर्यसमाज से कोई लाभ मिले। उनकी क्रूर दृष्टि आर्यसमाज से धर्नाजन करने की रहती है। केवल पदों के लिए ही भागदौड़ करते हैं। उन्हें वेद प्रचार कार्य से कोई सम्बन्ध नहीं रहता।

आर्यसमाज कोई धनार्जन करने का स्रोत नहीं यह तो व्यक्ति समाज व राष्ट्र की उन्नति हेतु एक क्रान्ति है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने आर्यसमाज के दस नियमों में छठे नियम में स्पष्ट लिखा है कि **"संसार का उपकार करना आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना।"** इससे आर्यसमाज का दायित्व संसार के लिए हो जाता है, अर्थात् मानव मात्र की उन्नति हेतु मानव ही नहीं पशुओं, वनस्पति, पृथ्वी, आकाश सभी के लिए है। इसीलिए तो वेद में कहा है **"ओ३म् द्यौ शान्ति पृथिवी शान्ति औषधयः शान्ति वनस्पतयै शान्ति...।"** अर्थात् आकाश पृथिवी औषधि वनस्पति आदि सभी से शान्ति हो इस प्रकार सभी की स्थिति को सामान्य रखने हेतु प्रार्थना है। आकाश पृथिवी आदि सभी हमारे जीवन को सुख देने वाले हों। हमें अपने व अपने परिवार, समाज एवं सभी की श्रेष्ठता के लिए कार्य करना चाहिए। संसार की सेवा करना हमारा उद्देश्य होना चाहिए और ऋषि ने जो कार्य आरम्भ किया था, वह कभी नहीं रुक सकता।

अनेक महानुभाव कहते भी है कि अब आर्यसमाज के कार्यों की आवश्यकता नहीं, यह सोच एक दम ठीक नहीं क्योंकि मनुष्य व समाज में विकृतियां आती ही रहती है और उन्हें अलग करना आर्यों का उद्देश्य है, जैसे कि कृषि की भूमि में फसल उगाई जाती है तो खरपतवार भी होती है। खरपतवार को अलग करना होता है। नहीं तो खरपतवार फसल को बर्बाद कर देगी। आर्यसमाज का भी यही दायित्व है समाज में संस्कारों की कमी, पाखण्ड, अन्धविश्वास व अनेक विकृतियां, नये-नये प्रकार से जन्म लेती है और उनको दूर करने हेतु कोई न कोई श्रेष्ठ पुरुष भी आगे आते रहते हैं, जो कि कम ही होते हैं और असामाजिक कार्य करने वालों से पाखण्डियों से अन्धविश्वासों से लड़ते व संघर्ष करते रहते हैं। बुराईयों का विरोध करते हैं। राष्ट्र हेतु अपना बलिदान तक कर देते है।

गुरुदत्त, भगवददत्त, पं. लेखराम, महात्मा मुंशीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) जैसे महान क्रान्तिकारी थे जिन्होंने आर्यत्व की दुन्दुभि को उन्नति पर पहुंचाया और अपना जीवन समर्पित कर दिया। ऋषि दयानन्द ने आर्यों के कार्य को आगे बढ़ाया जबकि दुनियां के लोग वेदों को भूलते ही जा रहे हैं। चाणक्य जैसे महान् कुशल वेदज्ञ व नीतिज्ञ ने तीन-तीन चक्रवर्ती सम्राट बनाए अन्त में चाणक्य की हत्या कर दी गई। श्रीकृष्ण ने महाभारत में पाण्डवों का पक्ष ले संघर्ष किया वह वेदों के विद्वान् थे योगीराज। अब जबकि सहस्रों वर्षों से भारत की भूमि आक्रान्ताओं से रक्त रंजित हो रही थी। बप्पारावल, राणा सांगा, उदयसिंह और महाराणा प्रताप जैसे शूरवीरों ने अपना राजपाट जीवन सब मातृभूमि हेतु बलिदान कर दी। अंग्रेजों से वीर सावरकर, चापेकर बन्धु, नेता जी सुभाषचन्द्र बोस, रानीलक्ष्मीबाई, भगतसिंह, सुखदेव, रामप्रसाद बिस्मिल जैसे महान क्रान्तिकारियों ने मातृभूमि हेतु बलिदान किया। ऐसे समय जब देश अंग्रेजों की दासतां से त्रस्त था। ऋषि

दयानन्द ने इस भारत भूमि पर जन्म लिया हालांकि दुनियां जानती थी कि अंग्रेजों के कितने अत्याचार यहां हो रहे थे, इससे पूर्व मुगल तुर्क पठान यूनानी आक्रान्ताओं के दंश इस भारत भूमि ने सहे, परन्तु जो इसका मूल था स्वतन्त्रता व भारत के चक्रवर्ती शासकों के होने का मूल था वह ऋषि दयानन्द ने ही बताया कि हमारे जो चक्रवर्ती शासक थे हमारे यहां जो ज्ञान विज्ञान था जो तक्षशिला नालन्दा जैसे विश्वविद्यालय थे, जिसके कारण विदेशी यहां ज्ञान व धनार्जन तथा व्यापार हेतु आते जाते थे। विश्व के राजा यहां की आज्ञा का भी पालन करते थे। इतना महान् होने का मन्त्र केवल वेद में है। यह ऋषि दयानन्द की नवभारत के निर्माण में विशेष देन है। ऋषि दयानन्द ने इसीलिए तो गुरुकुलों की शिक्षा पर ध्यान दिया संस्कार व वर्ण एवं आश्रम व्यवस्था पर बल दिया। वैदिक शिक्षा पर बल दिया वेद प्रचार को विश्व की उन्नति का मार्ग बताया और वेद से ही संसार की उन्नति हो सकती है। वेद ही हमारा मनुष्य मात्र का धर्म है अन्य सब मत मतान्तर है। वेद का ही प्रचार कर हम संसार को उन्नति के मार्ग पर चला सकते हैं। आर्यसमाजों का यही दायित्व है जब तक दुनियां रहेगी आर्यसमाजों और आर्यों का दायित्व रहेगा।

पता : गली नं. २, चन्द्रलोक कालोनी, खुर्जा-२०३१३१

आयुर्वेद का सन्देश

पथ्ये सति गदार्त्तस्यकिमौषधनिषेवणैः।
पथ्येऽसति गदार्त्तस्य किमौषधनिषेवणैः ॥ (लोलिम्बराज)

भावार्थ - आयुर्वेद विज्ञान की वैज्ञानिकता का इससे बढ़कर भला और क्या उदाहरण हो सकता है कि - जीवन रक्षा के सिद्धान्तों की जहाँ विवेचना ऋषि महर्षियों द्वारा की गयी है, वहाँ खुला चैलेन्ज देकर यह कहा है कि - यदि मनुष्य पथ्य (खान-पान, रहन-सहनादि में) पूर्णतया रखे तो फिर भला औषधियाँ सेवन करने की उसे आवश्यकता ही क्या? इस बात को आधुनिक विज्ञान ने भी सिद्ध कर दिया है कि - खान-पान आहार-विहार चित्त वृत्तियों का स्वास्थ्य से गहरा सम्बन्ध है। अतः पथ्य का पालन समग्रतया करना चाहिए। और यदि मनुष्य अपने ऊपर संयम रख ही नहीं सकता है तो पुनः औषधियाँ व्यर्थ है। लाख दवाइयाँ आप ले लीजिये, परन्तु पथ्याभाव के कारण आप कदापि लाभान्वित नहीं हो सकते हैं। आयुर्वेद के इस सुस्वास्थ्य विषयक सन्देश पर आज भारतवर्ष के सभी नागरिकों को विचार करने की नितान्त आवश्यकता है।

– सुभाषित सौरभ

.... **शुभ स्वागतम् - नव सम्वत्सरम्** ....

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, चैत्र नवरात्र, नववर्ष विक्रमी सम्वत् २०७३,

आर्यसमाज स्थापना दिवस एवं रामनवमी की

छत्तीसगढ़ के समस्त आर्यजनों एवं पाठकों को

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से

हार्दिक शुभकामनायें व बधाईयाँ

घर के अन्दर बैठे आतंकियों का क्या होगा ?

- शिवदेव आर्य-

ज्वलन्त प्रश्न

> अफजल गुरु जैसे आतंकवादियों से सहानुभूति रखना देशद्रोह नहीं तो और क्या है ? यह कोई छोटी घटना नहीं है, अपितु इसे एक योजनाबद्ध तरीके से कार्यरुप दिया गया है। क्योंकि बाहरी आतंकी शक्ति तो अपने आप ही कमजोर होती जा रही है। इसीलिए घर के अन्दर बैठे लोगों को ही आतंकी बनाने की जोर-शोर से तैयारी चल रही है।

भारत वर्ष का अपना निराला ही रुप दिखाई देता है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह एक मतनिरपेक्ष देश है, जिसको लोग धर्मनिरपेक्ष भी कह देते हैं। जहां धर्मनिरपेक्षता की आड़ में लोकतांत्रिक व्यवस्था को बिगाड़ने का हर सम्भव प्रयास किया जाता है।

ऐसा ही कुछ ९ फरवरी २०१६ को हुआ, शायद आपको यह सारा वृत्त ज्ञात होगा कि इस दिन क्या कुछ हुआ, ९ फरवरी को जे.एन.यू. में वामपन्थी और दलित संगठनों से जुड़े छात्रों ने संसद पर हमले के दोषी अफजल गुरु की बरसी मनाई, इसमें कश्मीर के छात्र शामिल थे। इसके लिए कैंपस में एक सांस्कृतिक संध्या का आयोजन भी किया गया था। इस दौरान देश-विरोधी नारे भी लगाए गये।

यह सब जानकर प्रत्येक भारतीय को बहुत दुःख हुआ होगा कि ९ फरवरी को ही हनुमनथप्पा जो जे.एन.यू. के समीपस्थ ही सेना के अस्पताल में देश के लिए अपनी आखरी सांस ले रहे थे। जहां समूचा देश एकजुट होकर उसके जीवन के लिए प्रार्थना व हवन कर रहा था, वहीं देश को एक नई दिशा व दशा देने वाला तथाकथित वर्ग ऐसे सिपाही के बलिदान को कुछ नहीं समझ रहा था, अपितु वह तो आतंकी गतिविधियों को बढ़ावा देने वाले को श्रद्धांजलि दे रहा था। संसद पर अफजल गुरु ने जो हमला किया यदि वह हमला जे.एन.यू में हुआ होता तब शायद वहां के लोगों की आंखे खुली होती। जहां संसार भर में इस कृत्य की निन्दा हुई, वहीं संसद हमले के समय संसद में फँसे हुए कुछ तथाकथित सांसद भी इस राष्ट्रद्रोही कृत्य का अनौपचारिक समर्थन कर रहे हैं। हम सभी जानते हैं कि देश में अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर देश की छवि धूमिल करने की पूरी कोशिश की जा रही है। अभी हाल की ही घटना है कि भारतीय क्रिकेटर विराट कोहली के समर्थक को लाहौर में अपनी छत पर भारतीय ध्वज फहराने पर २४ घण्टे के अन्दर-ही-अन्दर १० साल की सजा दे दी जाती है।

आज कल हम कश्मीर के विभिन्न भागों में तिरंगा जलाने और पाकिस्तानी तथा आईएस के झण्डे फहराने की घटनाएँ लगभग प्रत्येक दिन सुन व देख रहे हैं, ऐसे में सरकार के शान्त रहने से दिल्ली में इनके इतने हौसले बढ़ गए कि उन्होंने अफजल गुरु की फांसी के विरोध में कार्यक्रम आयोजित कर दिया और यूनिवर्सिटी को पता तक न चला, ये बेहद आश्चर्य को दर्शाता है। यह सचमुच बहुत ही शर्मसार कृत्य है। क्या यह देशद्रोह नहीं हैं ? इससे बढ़कर और आतंकी होने की कसौटी क्या हो सकती है ? **अफजल गुरु जैसे आतंकवादियों से सहानुभूति रखना देशद्रोह नहीं तो और क्या है ? यह कोई छोटी घटना नहीं है, अपितु इसे एक योजनाबद्ध तरीके से कार्यरुप दिया गया है। क्योंकि बाहरी आतंकी शक्ति तो अपने आप ही कमजोर होती**

जा रही है। इसीलिए घर के अन्दर बैठे लोगों को ही आतंकी बनाने की जोर-शोर से तैयारी चल रही है।

इन विरोधी छात्रों का आतंकवादी संगठन खुले-आम समर्थन कर रहे हैं। जे.एन.यू. में राष्ट्रविरोधी नारेबाजी को आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के प्रमुख हाफिज सईद का खुला समर्थन प्राप्त हो रहा है। सईद ने कथित तौर पर ट्वीट कर पाकिस्तानियों से जे.एन.यू. छात्रों के प्रदर्शन का समर्थन करने की अपील की थी।

सरकार को ऐसे कृत्य के लिए कड़ी से कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए कि कल को कोई और ऐसा करने की भूल मन में भी ना सोच सके।

दिल्ली तो क्या देश के किसी भी कोने में देशद्रोहियों के समर्थन में किसी को आवाज ऊंची करने की हिम्मत नहीं होनी चाहिए। शाहरुख खान, आमिर खान और करण जौहर जैसे कई काफिरों से पूछना चाहता हूँ कि जिन्होंने असहिष्णुता को लेकर देश की छबि खराब की और उन तथाकथित कलमबेंचू साहित्यकारों से जिन्होंने राष्ट्रीय पुरस्कार व सम्मान लौटाए, वे बताएं कि एक यूनिवर्सिटी में आतंकवादियों का समर्थन करने के लिए कार्यक्रम आयोजित करना कहां तक सही है ? अब इन लोगों की आत्मा क्यों नहीं रो रही है ? अब सबकी बोलती क्यों बन्द हैं ? अब ये चांडाल चौकड़ी **'गो इण्डिया गो बैक, भारत की बरबादी तक जंग रहेगी जारी, कश्मीर की आजादी तक जंग रहेगी जारी, अफजल हम शर्मिन्दा हैं तेरे कातिल जिन्दा हैं, तुम कितने अफजल मारोगे, हर घर में अफजल निकलेगा, अफजल तेरे खून से इन्कलाब आयेगा'** के नारों के विषय में क्या कहेंगे ?

यह भारत ही है जहां इतना सब कुछ होने पर भी अभी तक कार्यवाही के नाम पर केवल गिरफ्तारी ही की गई है। दिल्ली में इतना कुछ हो गया पर अब तक सब कुछ सहन किया जा रहा है। परन्तु यदि अलगाववादी कश्मीरियों या मुसलमानों के मामले पर कोई प्रदर्शन होता तो हमारे यहां इसे असहिष्णुता का नाम दिया जाता। यह भारत ही है, जहां सब कुछ चलता है क्योंकि हम सहिष्णु हैं। हम उन लोगों में से नहीं जो भूल जायें कि अफजल गुरु ने भारतीय संसद पर हमला किया और फिर ११ साल तक केश चला तब जाकर २०१३ में उसे फांसी की सजा दी गई, इस हमले को विफल करने वाले अपने उन ११ जवानों के बलिदान को कैसे भूला सकते हैं।

समय है कि इन दिनों देशद्रोहियों के खिलाफ तुरन्त एक्शन लिया जाना चाहिए। सवाल यूनिवर्सिटी प्रशासन की चुप्पी का नहीं है अपितु सरकार कब कड़ा कदम उठायेगी यह है। इस मामले में दिल्ली वालों को एकजुट होकर देशद्रोहियों को सबक सिखाने के लिए नई क्रान्ति लानी होगी। यही समय की मांग है।

लोकतन्त्र में सरकार को, व्यवस्था को, प्रधानमंत्री को, मन्त्रियों को, राजनीतिक पार्टियों आदि को बुरा-भला कहने की बात तो समझी जा सकती है, उसका समर्थन भी किया जा सकता है किन्तु अपनी ही जन्म भूमि का अहित करने की सोच रखने वाले कुछ भी हो सकते हैं किन्तु मनुष्य तो निश्चित नहीं नहीं हो सकते। जो अभिव्यक्तियों को ही स्वतन्त्रता के नाम पर देशद्रोह का समर्थन करते हैं, उनकी मानसिकता की जांच कराना हम सबका मौलिक कर्त्तव्य होना चाहिए।

राष्ट्र महान् है तथा राष्ट्र सर्वोपरि है, राष्ट्रद्रोही तत्वों का निर्मूल करना राजा का परम कर्त्तव्य है। यही राजा का राजधर्म है - देशद्रोही अथवा शत्रुपक्ष से मिले हुए के लिए दण्ड का विधान हुए चाणक्य नीति में इस प्रकार प्राप्त होता है कि - **'दुष्याः तेषुधर्मरूचिपां सुदण्डम् प्रयुजीत'** (५/४) अर्थात् देशद्रोह करने वाले का सर्वनाश कर देना चाहिए। यही इन कुकृत्य करने वालों के साथ करना चाहिए।

ऋग्वेद स्पष्ट शब्दों में आदेश देता है - **'अमित्रहा वृत्रहा दुस्युहा च विश्वा वसून्या भरा त्वं न'** (ऋग. १७/८३/३) अर्थात् जो समाज में दस्यु कर्म, सुख-शान्ति में बाधा डालने वाले हैं, उनके नष्ट कर देना चाहिए। ऐसे विकराल काल में राजा को कठोर निर्णय लेना चाहिए, जिसके लिए ऋग्वेद १०वें मण्डल में यह आदेश दिया गया है - **'ये नः .... उग्रं चेतारमधिराजमक्रन्।'** (१०१२८/९) देशद्रोही को कठोर से कठोर दण्ड के लिए यजुर्वेद के ३९वें अध्याय में कहा है कि -

'उग्रं लोहितेन मित्रं सौव्रत्येन रुद्रंदौर्व्रत्येनेन्द्रं प्रक्रीडेन मरुतो बलेन साध्यान् प्रमुदा। भवस्या कण्ठय रुद्रस्यान्तः पाश्चर्य महादेवस्य यकृच्छर्वस्य वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥' (यजु. ३९/९)

ऐसे दुष्ट पापचारियों तथा देशद्रोहियों के लिए मनु महाराज का विधान है कि - **'दण्ड शास्ति प्रजा सर्वा दण्ड एवाभि रक्षति'** (मनु. ९/७) अर्थात् दण्ड ही प्रजा को व्यवस्थित रखता है और दण्ड ही सभी की रक्षा करता है। अतः प्रशासन को इन कुकृत्यों के खिलाफ देशद्रोह का अभियोग चलाना चाहिए और कठोरतम दण्ड देना चाहिए।

यदि प्रशासन इस कार्य को करने में असमर्थ हो तो प्रत्येक भारतीय को अपनी भारतीयता को दिखाते हुए रतन टाटा के समान देश की प्रत्येक गतिविधियों से इन जेएनयू में पल रहे आतंकवादी कम्यूनिटो का बहिष्कार करना चाहिए।

आज प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यकता है कि वह हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि की क्षुद्र मानसिकता से ऊपर उठकर अपने को भारतीय बनाने का यत्न करना चाहिए। यही ऐसी समस्या का हल है अन्यथा आज एक ऐसी घटना हुई कल को सर्वत्र यही दृश्य दिखायी देंगे।

अब हम कैसा चाहते हैं, सोचने की बात है ?

पता - गुरुकुल पौन्धा, देहरादून

बोध कथा

"आम आदमी"

- देवेन्द्र कुमार मिश्रा

एक आम आदमी दौड़ता हुआ अदालत पहुंचा। मजिस्ट्रेट के सामने गिड़गिड़ाया - "हे न्याय के देवता। मुझे बचाइये। पुलिस किसी साजिश के तहत मुझे फंसाने की कोशिश कर रही है।" न्याय के देवता ने कहा - "न्याय इस तरह नहीं मिलता। आप नियम से आइये। पुलिस को केस बनाने दीजिये। केस अदालत में आने दीजिये। फिर आप एक अच्छा वकील करिये। तब आपको न्याय मिलेगा।" फिर मजिस्ट्रेट ने घड़ी पर नजर डालते हुए कहा - "इंसाफ का समय समाप्त होता है। ५.३० हो चुके हैं। कल रविवार है उसके बाद एक सप्ताह का शासकीय अवकाश। अवकाश में न्याय नहीं होता।"

आम आदमी ने कहा - "मेरा जीवन बर्बाद हो जायेगा। इस तरह न्याय में बहुत समय लगेगा आप आतंकवादियों के लिये रात भर अदालत चला सकते हैं। फिल्म स्टार के लिये देर तक बैठे रह सकते हैं जमानत देने की प्रतीक्षा में और मेरे लिये कुछ भी नहीं।"

तभी पुलिस आ गई। उसे घसीटते हुए थाने ले गई। थानेदार ने कहा - "तुम न आतंकवादी हो न फिल्म स्टार।" फिर लम्बी थर्ड डिग्री देकर उसे गुनाह कबूल करवाया गया। उसके खिलाफ गवाह, सबूत बनाये गये। फिर उसे जेल भेजा गया। उसके पास जमानत के लिये पैसे नहीं थे। जमानत मिल जाती तो जमानतदार नहीं था कोई। वह वर्षों जेल में रहा। पेशी पर पेशी होती रही। तारीख दर तारीख मिलती रही। बाहर उसका परिवार बिखर गया। सम्बन्ध खत्म हो गये।

बीस साल बाद उसी इंसाफ के देवता की अदालत में वह कटघरे में खड़ा था। मजिस्ट्रेट उसे पहचान गया। मजिस्ट्रेट ने कहा - "देखो न्याय प्रक्रिया लम्बी जरुर है। लेकिन न्याय तो होता है। मैं तुम्हें बाइज्जत रिहा करता हूँ। और वह गरीब इतना सुनते ही सदमें से उसके प्राण निकल गये।"

पता : पाटनी कालोनी, भरत नगर, चन्दनगांव
छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

बुद्धिं लुम्पति यद् द्रव्यं मदकारी तदुच्यते।
जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले, शारीरिक और मानसिक हानि पहुंचाने वाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी न करें।

आर्यसमाज में संख्यात्मक नहीं गुणात्मक विकास की आवश्यकता

चिन्तन

-: चैत्रशुक्ल प्रतिपदा आर्यसमाज स्थापना दिवस पर विशेष :-

- मनुदेव 'अभय' विद्यावाचस्पति, एम.ए.

संख्यात्मक नहीं गुणात्मक परिवर्तन आवश्यक

"आर्यसमाज में हमने प्रवेश किया, पर हमने आर्यसमाज प्रवेश न कर पाया। अनेक आर्यसमाजी आधे तीतर आधे बटेर की जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आर्यसमाज में आधे तरबूज व आधे खरबूजों की घुसपैठ बड़ी संख्या में हो रही है। इन घुसपैठियों के रास्तों को हमें रोकना होगा। मात्रात्मक परिवर्तन की अपेक्षा गुणात्मक परिवर्तन अधिक आवश्यक है। संख्यात्मक आधार पर संख्या का विस्तार निरर्थक सिद्ध हुआ है।" **स्वा. सोमानन्द का वाजेगांव में दिया गया अंश**

आर्यसमाज एक ऐसा क्रान्तिकारी संगठन है, जिसके माध्यम से व्यक्ति परिवार, समाज तथा राष्ट्र को चरम उन्नति के द्वार तक पहुंचाया जा सकता है। आर्यसमाज क्षेत्र किसी निश्चित सूबे प्रान्त तथा भारत राष्ट्र तक सीमित नहीं है। वेद के अनुसार **'यत्र विश्वं भवत्येक नीडम्'** अर्थात यह सम्पूर्ण विश्व एक नीड़ अर्थात घोंसले की तरह है, एक घर, कुटिया या कुटुम्ब की तरह है, जिसमें निवास करने वाले सभी प्राणी-मनुष्य (स्त्री-पुरुष) परस्पर दुःख-सुख के साथी एवं परस्पर सहयोगी सदस्य है। अथर्ववेद का स्पष्ट आदेश है -

"माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः" अर्थात् मैं भूमि-पुत्र हूँ, मेरी जननी यह पवित्र भूमि (राष्ट्र-देश) है, किन्तु मैं सम्पूर्ण पृथिवी का सुपुत्र/नागरिक हूँ। क्या विशाल दृष्टि-कोण है। संसार की किसी भी धर्म, पुस्तक में किसी भी संस्कृति-सभ्यता में इसका विशाल और बृहत्तर विचार, संस्कार उपलब्ध नहीं है। संस्कृति विश्वाचरण अर्थात् विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति वैदिक संस्कृति है। प्रसंगानुसार मंत्र में प्रयुक्त भूमि और पृथिवी इन दो पदों का अर्थ गहराई से जानने का प्रयत्न करें। तभी तो व्यक्ति की भावना संस्कार और आदर्शों का ज्ञान हो सकेगा।

इस मंत्र में प्रयुक्त पद भूमि से यह तात्पर्य है कि जिस ग्राम/नगर में मैं उत्पन्न हुआ हूँ उस ग्राम/जिला/प्रान्त तथा देश का मैं नागरिक हूँ। जिस देश की मृदा-मिट्टी से मेरा यह शरीर बना है, जिस देश में उत्पन्न दुधारू पशुओं का दूध तथा खेतों में उत्पन्न अन्न और औषधियों से यह शरीर हृष्ट-पुष्ट हुआ है, जिस देश के ऋषियों-मुनियों आप्त पुरुषों तथा महापुरुषों द्वारा प्रदत्त ज्ञान द्वारा मेरा मानसिक-बौद्धिक विकास हुआ है, उसके आध्यात्मिक उपदेशों से मेरी आत्मा का विकास हुआ है जिस देश की नदियों, तालाबों, झरनों, वनों-वाटिकाओं द्वारा मुझे विविध प्रकार का सुख प्राप्त हुआ है वे सब मेरे लिए पूज्य और प्रिय हैं। मैं उन सबके उपकारों के प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। वही मेरा देश है और मैं उसका नागरिक हूँ। देशोन्नति, रक्षा-सुरक्षा के प्रति मैं सदैव तैयार रहूंगा। यदि देश सुरक्षित है, तो मेरा परिवार और समाज सुरक्षित है। एक सुरक्षित राष्ट्र में आध्यात्मिक चेतना का विकास होता है। यह सर्वमान्य सिद्धान्त है।

मेरा यह प्रिय राष्ट्र इस विशाल पृथ्वी का एक भू-भाग है। इस पृथिवी पर और अनेक राष्ट्र हैं, जिनमें इस देश के समान ही स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी, नदी-सरोवर तथा सुन्दर समुद्र है। पृथिवी के सभी राष्ट्रों के निवासी परस्पर एक परिवार के सदस्यों के समान है। मैं अपनी मातृभूमि में रहकर कोई ऐसा कार्य न करुं, जिससे अन्य राष्ट्रों के नागरिकों को पीड़ा पहुंचे। मैं प्रथमतः अपने देश का निष्ठावान नागरिक हूँ, तत्पश्चात् इस पृथ्वी के अन्य राष्ट्रों के प्रति सद्भावना तथा समान की भावना रखता हुआ मैं विश्व नागरिक भी हूँ। इन राष्ट्रों में निवास करने वाले नागरिकों में एक ही ईश्वर की

सामाजिक अनुष्ठान में कमी

यह सर्वमान्य सिद्धान्त है कि समाज में स्थापित अनेक संगठनों में विविध रूचि एवं स्वभाव वाले व्यक्ति रहते हैं। यद्यपि किसी भी संगठन के उद्देश्य कभी खराब नहीं होते परन्तु उनमें व्यस्त और न्यस्त कुछ व्यक्ति अपने-अपने स्वार्थ-साधन ढूंढने लगते हैं। संगठन का आवरण ओढ़े हुए ऐसे कथित सदस्य या पदाधिकारी समाज कल्याण की अपेक्षा स्वविकास तथा संस्था के विकास में अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं। बस, यही तत्व समाज की असली शक्ति का ह्रास करने लगता है। आर्यसमाज की मन्दगामी शक्ति का मूल कारण भी गुणात्मक विकास के स्थान पर संख्यात्मक विकास है। इसमें भी दोहरे जीवन व्यतीत करने वाले अधिक दोषी हैं। ऐसे तत्वों से अति सजग रहना अनिवार्य है। -लेखक

सत्ता का दर्शन करता हुआ, मनुष्यता के नाते उनका सम्मान करता हूँ। मेरे राष्ट्र के समान विश्व के अन्य राष्ट्र भी परमात्मा की इस भूमि पर बसे हुए हैं, इसलिए वे मेरे समान ही विश्व के नागरिक हैं।

विस्तार से इतनी महत्वपूर्ण बातें लिखने का मुख्य कारण यह कि प्रत्येक आर्य की मानसिक पृष्ठभूमि उपर्युक्त आदर्शों पर आधारित रहती है। आर्यसमाज के संगठन की सर्वोच्च संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली-२ के विवादों को हल करने की जिम्मेदारी तीन या चार सम्माननीय न्यायमूर्त्तियों को सौंपी गई। इन सभी सम्माननीय न्यायमूर्त्तियों ने भी वादी को कहा था - हमारी मानसिक पृष्ठभूमि और आस्थाएँ आपकी ही तरह वैदिक धर्म में हैं। वादी-प्रतिवादी परस्पर मिलकर न्यायालय के परिक्षेत्र से दूर-दूर रहकर इस वाद में पड़ी कठिनाईयों को स्वयं हल कर लें। अब पाठक समझ गये होंगे कि मानसिक पृष्ठभूमि का समाज में कितना महत्व है।

समस्या इस समय जटिल हो जाती है, जिस समय श्रद्धावाद वैदिक धर्मी अपने आदर्शों के आधार पर अपने संगठन को दृढ़ बनाये रखना चाहते हैं और आगे बढ़ना चाहते हैं। परन्तु संगठन में सभी श्रद्धावान और निष्ठावान नहीं होते। ऐसे तत्वों को कथित इस विशेषण को दिया जाता है। कथित सदस्यों का सहयोग तभी तक प्राप्त होता रहता है, जब तक उनके स्वार्थ पर आँच नहीं आती। संगठनात्मक नियम-उपनियम का पालन भी वे बाह्य रुप में करते दिखाई पड़ते हैं, परन्तु उनकी विचारधारा की पृष्ठभूमि और मानसिकता उससे जुड़ी नहीं रहती। बस, यहीं से उस संगठन में मतभेद के साथ मनभेद की दरारें पड़ने लगती है।

आर्यों का आदर्श तथा मत निम्नलिखित पद्यात्मक पंक्तियों में व्यक्त है- कवि अश्विनी कुमार पाठक के शब्दों में -

आर्य हमारा नाम है,
वेद हमारा धर्म।
ओ३म् हमारा देव है,
यज्ञ हमारा कर्म।।
सत्य हमारा लक्ष्य है,
गायत्री महामंत्र है।
भारत अपना देश है,
यह सदा रहे स्वतन्त्र।।

इतना ही नहीं एक श्रद्धालु, वैदिक धर्मी की आत्मिक, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक भावनाएँ धर्म, समाज और राष्ट्र के लिए अधोलिखित प्रार्थना की शब्दावली में है। प्रत्येक वैदिक धर्मी आर्य अपने राष्ट्र के प्रति कितना ऊँचे भाव रखता है, पढ़िये -

हे परमेश्वर ! इस पावन भारत भूमि पर कभी भी विदेशी शासन न होने इस भारत वर्ष में सदैव स्वराज्य रहे। सभी सुखों का भण्डार यह मेरा देश सदैव स्वाधीन, सम्पन्न सुखी और सम्मानित रहे। हमारा वैदिक धर्म सदैव और सर्वत्र फैले और हमें कभी भी वेद विरोधी विदेशी मत और विदेशी राजा का दास न होना पड़े। हम स्वदेश, स्वधर्म और स्वाभिमान की सदैव रक्षा करने में प्रयत्नरत बने रहें। स्वराज्य में हमारे गौरव, गरिमा और स्वाभिमान रहे।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द वेदों को स्वतः प्रमाण मानते थे जो कि बुद्धि-आधारित सिद्धान्त है। उनकी दृढ़ धारणा था कि मनुष्य अल्पज्ञ तथा कर्मबंधन से जुड़ा हुआ है, उस पर उसके पूर्व जन्मों के संस्कार सूक्ष्म शरीर में विद्यमान रहते हैं, इस कारण उनके स्वभाविक ज्ञान के अतिरिक्त नैमित्तिक ज्ञान में कहीं न कहीं त्रुटि तो बनी रहती है। वे स्वयं भी अपने आपको मनुष्यों की अल्पज्ञों की

श्रेणी में रखते थे। स्वामी जी महाराज को ईश्वर, वेद और उसकी बनाई हुई व्यवस्था पर बड़ा विश्वास था। इन पंक्तियों के लेखक कभी-कभी उन्हें सत्यमूर्ति कह दिया करता है।संसार में ऋत अर्थात् प्राकृतिक शक्तियां और उनके अटूट नियम तथा सत्य अर्थात लौकिक जगत के चैतन्य प्राणियों के व्यवहार तथा नियम, इन्हीं दोनों ऋत तथा सत्य का ही यह विश्व (यूनीव्हर्स) है। यह सब क्रीड़ा जगत है। सभी चक्र चलायमान है, परन्तु इन पर उस प्रभु का नियंत्रण है। वह जड़-चेतन जगत में अन्दर तथा बाहर से व्याप्त है। वह पास भी है और दूर भी है। उसकी प्रेरणा ही चैतन्य जत की अद्भुत शक्ति है।

उपरोक्त तथ्यों का प्रस्तुतीकरण का एक मात्र उद्देश्य यही है कि आर्य समाज में प्रविष्ट होने के इच्छुकों को ऋषि दयानन्द के मन्तव्यों को भली भाँति समझ लेना चाहिए। विगत छः दशकों से आर्यसमाज के वातावरण में रहने के पश्चात् यह अनुभव कर पाया हूँ कि आर्यों के इस असंख्य और विशाल समुदाय में प्रायः ४०-५० प्रतिशत ही आर्यसमाज के वैदिक सिद्धान्तों को समझते एवं तदनुरुप जीवन व्यतीत करते हैं। बस यही ४०-५० प्रतिशत आर्यसमाज की गुणात्मक पूंजी या सम्पत्ति है। शेष कथित आर्यों की कोटि में गणना करने योग्य है।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमें वर्तमान में खड़े होकर अपने स्वर्णिम 'भूत' को स्मरण करना अनिवार्य है। कोई भी व्यक्ति या परिवार अथवा समाज अपने स्वर्णित गुण-गाथा गाकर या सुनाकर जीवित नहीं रह सकता हाँ, उसमें प्रेरणा प्राप्त कर सकता है। हमारा भूत ही हमारा आदर्श है और प्रेरणा का स्रोत हो सकता है।परन्तु अपने 'भव्यम' भविष्य को स्वर्णिम बनाने के लिए त्याग, निष्ठा, परिश्रम तथा लक्ष्य को निश्चित कर लक्ष्मण बनाना अनिवार्य है। सम्प्रति, आर्यसमाज के मञ्च तथा पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से केवल और केवल 'स्वर्णिम भूत' की अत्यधिक चर्चा की जाती है। यदि इसे सीमित कर वर्तमान में उलझी हुई समस्याओं, संगठन की बिखरी शक्तियों कथित नेताओं के व्यवहार से सजग रहने की ओर शक्ति लगा दी जाय तो अधिक लाभ होगा। आर्यसमाज के सशक्त मञ्च तथा सबल संगठन चल-अचल सम्पत्ति देश-विदेश में बढ़ते हुए सांस्कृतिक-धार्मिक प्रभाव के कारण विभिन्न वर्गों के लोग इस ओर आने लगे हैं। इससे निःसंदेह आर्यसमाज का संख्यात्मक विकास हुआ है।

आर्यसमाज की वास्तविक शक्ति उसका अपना गुणात्मक विकास है। संख्यात्मक विकास में अधिकांश ऐसे तत्व हैं जो विभिन्न अवसरों पर अपनी लौकिक स्वार्थ पूर्ति के लिए अपनी टोपियां और आवरण बदल लेते हैं। ऐसे आवरण बदलुओं से ही आर्यसमाज की वैदिक मान्यताओं पर लिखित आक्षेप करने लगे हैं, जिन्हें प्रत्युत्तर भी दिया जा रहा है। ये आरोप या आक्षेप कर्त्ता कथित पुराने आर्य है, जिन्हें लौकिक ऐषणाएँ गुमराह कर रही है। इसलिए आज आर्यसमाज के गुणात्मक विकास की वास्तविक अनुयायियों को ऋषि दयानन्द पर श्रद्धा रखने वालों की नितान्त आवश्यकता है। ध्यान रहे हमारा भूत भी स्वर्णिम और महान था और अब भविष्य भी स्वर्णिम तथा महान है। ईश्वर की कृपा का वरदहस्त भी है।

पता - सुकिरण, अ/१३, सुदामा नगर, इन्दौर (म.प्र.)

❀ अल्पज्ञ ❀

अल्पज्ञ एव पुरुषः प्रलपत्यजस्रं, पाण्डित्यसम्भृतमतिस्तु मितप्रभाषी।
कांस्यं यथा हि कुरुतेऽतितरां निनादं, तद्वत् सुवर्णमिह नैव करोति नादम्॥

अल्पज्ञ पुरुष ही निरन्तर अनाप-शनाप, लम्बी-चौड़ी बातें करता रहता है, किन्तु सदसद्-विवेकी विद्वान् बहुत थोड़ी ही सारयुक्त मतलब की बात किया करते हैं। जैसे देखा जाता है कि कांसा (कांस्यनिर्मित घड़ी, घण्ट आदि) थोड़े से ही आघात में अत्यधिक झनझनाहट के साथ जितना शब्द करता है, उतना ठोस एवं बहुमूल्य सोना पदार्थ ठोकने पर भी आवाज नहीं करता।

- सूक्तिमुक्तावली (१२)

(तुलनात्मक)

विद्युत और आत्मा

- अजय शर्मा

आज हमारे जीवन का एक बड़ा हिस्सा विद्युत चलित उपकरणों का उपयोग करते हुए व्यतीत हो रहा है। किसी दिन कुछ घंटों के लिए भी यदि विद्युत उपलब्ध न रहे तो बडी कठिनाई महसूस होती है। विद्युत ने वाकई हमारे जीवन को आसान और आरामदायक बना दिया है। विद्युत चलित उपकरणों का प्रयोग कर हम अपने दैनिक कार्य सुगमतापूर्वक कम समय में पूर्ण कर लेते है। हम अपने घर को प्रकाशित करने के लिए बल्ब, ट्यूबलाईट, एलईड़ी का प्रयोग करते हैं। ये ऐसे उपकरण है जो विद्युत धारा प्रवाहित करने पर प्रकाश का उत्पादन करते है, विद्युत की अनुपस्थिति में ये उपकरण निष्क्रिय रहते है। इसी प्रकार रेडियो, ट्रांजिस्टर और माइक्रोफोन जैसे उपकरणो से जब विद्युत का प्रवाह होता है तो ध्वनि उत्पन्न होती है। रूम हीटर, वाटर हीटर, गीजर, हेयर ड्रायर, ओवन, टोस्टर, ये कुछ ऐसे उपकरण हैं जिनसे जब विद्युत का प्रवाह होता है तो ये ऊष्मा उत्पन्न करते है। वे सभी खिलौने व मशीनें जिनमें मोटर लगी होती है जैसे मिक्सर ग्राईडर, पंखे एवं खिलौने इत्यादि विद्युत धारा प्रवाहित करने पर सरल रेखीय या घूर्णन गति करने लगते हैं। इन भिन्न-भिन्न उपकरणो में से जब विद्युत धारा प्रवाहित होती है तो विद्युत के विभिन्न प्रभाव यथा प्रकाश उत्पादन, ध्वनि उत्पादन, ऊष्मा उत्पादन तथा गति का प्रदर्शन होता है।

रेड़ियो, टी वी, मोबाईल, सीड़ी प्लेयर, कंप्यूटर, स्टीरियो जैसे उपकरणों में स्पीकर प्रयुक्त होता है। स्पीकर में ध्वनि उत्पन्न करने की क्षमता होती है किंतु इससे तब तक ध्वनि उत्पन्न नहीं होती जब तक कि उसमें से विद्युत धारा प्रवाहित न की जाए। विद्युत धारा के प्रवाहित होने पर ही स्पीकर सक्रिय होता है। दूसरी ओर देखें तो विद्युत को ध्वनि उत्पन्न करने के प्रभाव प्रदर्शन के लिए स्पीकर की आवश्यकता पड़ती है। स्पीकर हो किंतु विद्युत उपलब्ध न हो तो ध्वनि उत्पन्न नहीं होती इसी प्रकार विद्युत हो किंतु स्पीकर न हो तब भी ध्वनि का उत्पादन नहीं होता। बल्ब के तंतु में प्रकाश उत्पन्न करने की क्षमता होती है किंतु विद्युत की अनुपस्थिति में वह प्रकाश का उत्पादन नहीं करता, बल्ब के तंतु से विद्युत के प्रवाहित होने पर ही उसका प्रकाश उत्पादन का गुण परिलक्षित होता है। दूसरी ओर विद्युत के प्रकाश उत्पादन का गुण तब तक परिलक्षित नहीं होता जब तक वह बल्ब के चालक तंतु से प्रवाहित नहीं हो जाती। बल्ब हो किंतु विद्युत न हो तो प्रकाश का उत्पादन नहीं होता इसी प्रकार विद्युत हो किंतु बल्ब न हो या कि बल्ब फ्यूज हो तो भी प्रकाश का उत्पादन नहीं होता। पंखों में घूर्णन की क्षमता होती है किंतु विद्युत धारा की अनुपस्थिति में पंखों की गति नहीं होती। विद्युत में यांत्रिक कार्य करने की क्षमता होती है किंतु उसका प्रदर्शन तभी होता है जब वह पंखे मे से होकर प्रवाहित होती है। बल्ब, पंखे, गीजर, कूलर, फ्रिज, एसी, ऐसे जितने भी उपकरण जिनका हम उपयोग कर रहे हैं उन सभी को क्रियाशील करने वाला कारक एक ही है, वह है विद्युत ऊर्जा।

विद्युत ऊर्जा दो प्रकार की होती है दिष्ट विद्युत धारा एवं प्रत्यावर्ती विद्युत धारा। कुछ उपकरण दिष्ट विद्युत धारा से संचालित होते है तथा कुछ उपकरणों का संचालन प्रत्यावर्ती धारा द्वारा किया जाता है। विभिन्न उपकरणों के संचालन हेतु प्रयोग में लाई जाने वाली विद्युत ऊर्जा भी भिन्न-भिन्न परिमाण की होती है। उदाहरणस्वरूप टार्च का बल्ब या एक एलईडी डेढ वोल्ट वाली दिष्ट विद्युत धारा प्रवाहित होने पर प्रकाश उत्पन्न करता है वहीं घर में प्रयुक्त बल्ब दो सौ बीस वोल्ट की प्रत्यावर्ती विद्युत धारा प्रवाहित होने पर प्रकाश का उत्पादन करता है। भिन्न-भिन्न उपकरण जिनमें भिन्न-भिन्न क्षमता होती है विद्युत धारा की उपस्थिति में सक्रिय होकर भिन्न-भिन्न प्रभाव प्रदर्शित करते है। प्रकाश का उत्पादन, ध्वनि का उत्पादन, ऊष्मा का उत्पादन, गति इत्यादि सभी विद्युत के ही प्रभाव हैं जिनका प्रदर्शन वह विभिन्न उपकरणों से प्रवाहित होकर करती है। इन सारे उपकरणों का क्रियान्वयन, संचालन एवं नियंत्रण विद्युत ऊर्जा द्वारा होता है। एक ही कारक, विद्युत ऊर्जा से संचालित होकर भी भिन्न-भिन्न उपकरण भिन्न-भिन्न व्यवहार करते दिखाई पडते है। ये उपकरण सक्षम होते हुए भी विद्युत की अनुपस्थिति में अपनी क्षमता का प्रदर्शन करने में असमर्थ होते है। विद्युत को अपने विभिन्न प्रभावों के प्रदर्शन हेतु विशेष उपकरणों की आवश्यकता होती है। बिना विद्युत के ये सारे उपकरण

अनुपयोगी ही प्रतीत होते हैं तथा बिना इन उपकरणों के विद्युत के विभिन्न प्रभावों का प्रदर्शन नहीं होता।

मानव शरीर की प्रत्येक जैविक क्रिया चाहे वह चेतन हो या कि अचेतन, भौतिक हो या मानसिक इन्हें अल्प परिमाण की विद्युत धारा से ही शक्ति प्राप्त होती है। दर्द की अनुभूति, कोशिका संकुचन एवं गति, संवेदी क्रियाएँ, ग्रन्थियों से श्राव, मस्तिष्क की क्रियाएँ, संकेतों का आदान प्रदान ये सभी विद्युत चलित क्रियाएँ है। मानव ह्रदय एक ऐसी कोशिकीय रचना है जो अल्प विद्युत धारा से गतिशील होता है। इसकी गति का मापन इलेक्ट्रोकार्डियोग्राफ (ईसीजी) द्वारा किया जाता है। जब विद्युत सिग्नल अत्यंत क्षीण हो जातें हैं तो जीवनदायी धडकन को बनाए रखने के लिए एक विद्युत उपकरण का प्रयोग किया जाता है जिसे पेसमेकर कहा जाता है। पेसमेकर उचित मात्रा में विधुत धारा प्रदान कर ह्रदय की धडकन को बनाए रखता है।

हमारे शरीर को बनाने वाली कोशिकाओं के द्वारा सूचनाओं का आदान प्रदान विद्युत तरंग के माध्यम से होता है। मानव मस्तिष्क व तंत्रिका तंत्र को बनाने वाली मूल इकाई न्यूरॉन है । न्यूरॉन एक विद्युत उद्दीप्त कोशिका है । शरीर के सारे भाग से संदेशों के संग्रहण, संप्रेषण तथा विश्लेषण के लिए न्यूरॉन ही उत्तरदायी होते है। संपूर्ण मानव शरीर में विद्युत की उपस्थिति होती है। विद्युत आवेशों के प्रवाह से ही कोशिकाओं में संकुचन और दिल में धड़कन होती है। मानव मस्तिष्क एव तंत्रिका तंत्र में अरबों की संख्या में क्षीण विद्युत उर्मिकाएँ प्रवाहमान रहती है जिसकी वजह से सजीव शरीर के परितः विद्युत चुंबकीय क्षेत्र निर्मित होता है यही सजीव का आभामंडल कहलाता है, और इसी वजह से शरीर विद्युत चुंबकीय तरंगों का उत्सर्जन करता है। यह उसी तरह की घटना है जिसमें किसी चालक से विद्युत धारा प्रवाहित होने पर उसके परितः विद्युत चुंबकीय क्षेत्र उत्पन्न हो जाता है। प्रश्न उठता है मानव शरीर में विद्युत आती कहाँ से है। वैज्ञानिकों का कहना है कि मानव शरीर में विद्युत ऊर्जा का उत्पादन कोशिकाओं के भीतर होने वाली रासायनिक क्रिया का परिणाम है। मानव शरीर में सोडियम, पोटेशियम, कैल्सियम, मैग्निशियम, फास्फोरस, व क्लोराईड इत्यादि विद्युत अपघट्य पाए जाते है। ह्रदय की विशिष्ट कोशिकाओं के भीतर बाहर इन विद्युत अपघट्यों के विनिमय के परिणामस्वरूप उस कोशिका के भीतरी व बाहरी सतहों के मध्य एक विद्युत विभव उत्पन्न होता है। एक नियत मान से अधिक होने पर यह विभव तंत्रिकाओं से संप्रेषित होता है।

हमारा सजीव शरीर विभिन्न तंत्रों का कार्यकारी समूह है। शरीर में उपस्थित विभिन्न अंग आँख, कान, नाक मुख, मस्तिष्क, यकृत, ह्रदय भिन्न-भिन्न प्रयोजन हेतु प्रयुक्त होते है। इन सभी का संचालन आत्मा द्वारा किया जाता है। आत्मा की अनुपस्थिति में ये अंग निष्क्रीय रहते है। आत्मा को अपनी क्षमताओं यथा महसूस करने की क्षमता, विचार करने की क्षमता, निष्कर्ष निकालने की क्षमता के प्रदर्शन हेतु शरीर के विभिन्न अंगों की आवश्यकता पड़ती है। अंगों की उपस्थिति के बिना शरीर में आत्मा के इनमें से किसी भी गुण का प्रदर्शन हमें परिलक्षित नहीं होता है। सजीव आत्मावान शरीर मस्तिष्क की अनुपस्थिति में सोच नहीं सकता, विचार नहीं कर सकता, विश्लेषण नहीं कर सकता। वहीं दूसरी ओर शरीर में मस्तिष्क हो किंतु आत्मा अनुपस्थित हो तो वह सोच, विचार या विश्लेषण नहीं कर सकता। सजीव शरीर आँखों की अनुपस्थिति में देख नहीं सकता, इसी तरह आँखें हो किंतु शरीर आत्माविहीन हो तो भी देखना संभव नहीं होता है। सजीव शरीर मुख की अनुपस्थिति में बोल नहीं सकता, कर्ण की अनुपस्थिति में सुन नहीं सकता, संवेदी एवं प्रतिक्रिया तंत्र की अनुपस्थिति में प्रतिक्रिया प्रदर्शित नहीं कर सकता इत्यादि।

सजीव शरीर में उपस्थित आत्मा के लक्षण विभिन्न उपकरणों (अंगों) के माध्यम से प्रदर्शित होते है। सजीव शरीर में जितने कम अंग होंगे उनके द्वारा आत्मा के लक्षणों का प्रदर्शन भी उतना ही कम होगा। न्यूनतम अंगों की उपस्थिति में आत्मा के लक्षणों का प्रदर्शन भी न्यूनतम होगा। पादप की गिनती सजीवों में होती है। पादप में भी सजीव में निवास करने वाली आत्मा की उपस्थिति होनी चाहिए और उस आत्मा की उपस्थिति के लक्षण पादप द्वारा प्रदर्शित होने चाहिए। आत्मा की उपस्थिति दर्शाने के लिए हमें ज्ञात माध्यमों में से न्यूनतम माध्यम पादप में पाए जाते हैं। इसी वजह से पादप द्वारा हमारी तरह संवाद, विचार, कल्पना, विश्लेषण एवं अनुभूति का प्रदर्शन नहीं किया जाता है हालाँकि पादप द्वारा जन्म, श्वसन, भोजन, पुनर्उत्पादन एवं मृत्यु का प्रदर्शन किया जाता है।

" पदार्थ की लघुतम इकाई है परमाणु। प्रत्येक परमाणु में ऋणावेशित कण इलेक्ट्रान सदैव धनावेशित केन्द्र के परितः परिक्रमा करता रहता है। ऋणावेशों की गति को ही विद्युत धारा कहा जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि परमाणु में विद्युत धारा सदा ही प्रवाहित रहती है किंतु परमाणु में उपस्थित विद्युत धारा का अनुभव हमें नही होता क्योंकि परमाणु में वे संसाधन उपलब्ध नहीं हैं जिनसे विद्युत के विभिन्न प्रभाव प्रदर्शित होते है या फिर विद्युत का परिमाण इतना अल्प होता है कि वह हमारी अनुभव कर सकने की

क्षमता से निम्न होता है। परमाणु में विद्युत उपस्थित होती है किंतु अल्प परिमाण एवं संसाधनों के आभाव में हमें उसकी उपस्थिति का ज्ञान नहीं होता। ठीक इसी तरह क्या यह भी संभव है कि सजीव शरीर को बनाने वाली लघुतम इकाई कोशिका में आत्मा विद्यमान हो और हमें मानवीय सीमाओं की वजह से आत्मा की उपस्थिति का बोध न होता हो ? क्या ऐसे किसी पिण्ड की कल्पना की जा सकती है जिसमें आत्मा उपस्थित तो हो किंतु संसाधनों की अनुपस्थिति की वजह से हम उस पिण्ड में आत्मा की उपस्थिति का अनुभव न कर पाएँ। "

स्वस्थ्य शरीर में श्वसन तंत्र, पाचन तंत्र, रक्त संचरण तंत्र, पुनरूत्पादन तंत्र, संवेदी एवं प्रतिक्रिया तंत्र, कंकाल तंत्र इत्यादि सामूहिक रूप से मिलकर कार्य करते हैं। किसी एक भी तंत्र की क्रियाविधि बाधित हो तो उसका प्रभाव संपूर्ण शरीर पर पड़ता है तथा ऐसी दशा में शरीर रूग्ण कहलाता है। स्वस्थ्य सजीव के लिए शरीर में उपस्थित सारे तंत्रों का सामूहिक रूप से सक्रिय होना एक आवश्यक शर्त है। सजीव शरीर में उपस्थित सारे अवयव क्रियाशील रहते हैं वहीं निर्जीव शरीर में अंगों की क्रियाशीलता परिलक्षित नहीं होती। यह सर्वमान्य तथ्य है कि जीवित शरीर में उपस्थित विभिन्न अंगों अवयवों की सक्रीयता के लिए उस शरीर में विद्यमान आत्मा ही उत्तरदायी है। आत्मा की उपस्थिति में ही शरीर के अंगों की क्रियाशीलता परिलक्षित होती है। आत्मा विहीन शरीर में अंग अक्रिय ही रहते है। शरीर विज्ञानियों ने यह पता लगाया, यद्यपि मृत शरीर के अंगों में कार्यक्षमता होती है किंतु उनके संचालन कारक (आत्मा) की अनुपस्थिति के कारण उन अंगों की क्रियाशीलता परिलक्षित नहीं होती। हालांकि अंगों में यह क्षमता मृत्यु के पश्चात् कुछ अवधि तक ही रहती है। समय बीतने के साथ-साथ मृत शरीर के अंग अपनी क्षमता खोते जाते है। यदि अल्प अवधि में मृत घोषित शरीर से इन अंगों को निकालकर किसी जीवित शरीर में प्रत्यारोपित कर दिया जाए तो मृत शरीर के वे अंग दूसरे शरीर जिनमें उनका प्रत्यारोपण किया जाता है पुनः सक्रिय हो जाते हैं। सजीव शरीर में विद्यमान संचालक (आत्मा) इन प्रत्यारोपित अंगों का संचालन करने लगता है। शरीर के किसी अंग में कार्य करने की क्षमता हो किंतु उसे क्रियाशील करने वाला कारक उपस्थित न हो तो उस अंग की क्षमता परिलक्षित नहीं होती। एक चिकित्सक किसी रोगी को एक विकारयुक्त शरीर के रूप में देखकर ही उचित उपचार करता है। रोग उपचार के इस तरीके में वह काफी हद तक सफल भी रहा है। आज चिकित्सक शरीर के विभिन्न अंगों की कार्यविधि से परिचित हो कर उसकी क्रियाविधि में आए किसी परिवर्तन को रोग मानकर उस परिवर्तन के कारणों के निदान का उपाय करता है। इस तरह बड़ी से बड़ी शल्य क्रिया करने में वह सफल भी हो रहा है। कुछ विद्वान हृदय में आत्मा का निवास मानते हैं आज चिकित्सक उस हृदय की शल्यक्रिया भी सफलता पूर्वक कर रहा है। आज चिकित्सको द्वारा ऐसे व्यक्ति जिसे मस्तिष्क मृत घोषित किया जाता है उस मृत घोषित शरीर से हृदय निकाल कर किसी विकारग्रस्त हृदय वाले शरीर में प्रत्यारोपित किया जा रहा हैं। सन् 1967 में पहला हृदय प्रत्यारोपण किया गया था उसके बाद प्रतिवर्ष हजारों हृदय प्रत्यारोपित किए जा रहे है। मृत घोषित शरीर से निकाला हुआ हृदय दूसरे शरीर में सामान्य ढंग से कार्य करने लगता है। *"यहाँ एक बात विचारणीय है कुछ विद्वान हृदय में आत्मा का निवास मानते हैं । जब हृदय प्रत्यारोपण की घटना होती है तो हृदय के साथ साथ आत्मा को भी शरीर से निकल जाना चाहिए, किंतु ऐसा होता नजर नहीं आता। मृत्यु की घोषणा के पश्चात् ही हृदय दान लिया जाता है। जिस हृदय का दान किया जाता है वह तों आत्माविहीन शरीर से लिया जाता है और दूसरे रुग्ण व्यक्ति के आत्मावान शरीर से विकारयुक्त हृदय को निकाल कर उसके स्थान पर आत्माविहीन शरीर से निकाला गया हृदय प्रत्यारोपित किया जाता है। यदि रोगी व्यक्ति के हृदय में आत्मा का निवास होता तो उस शरीर से निकाले गए विकारयुक्त हृदय के साथ आत्मा को भी निकल जाना चाहिए। किंतु पाया यह गया है कि मृत, आत्माविहीन शरीर से लिया गया हृदय दूसरे शरीर में क्रियाशील हो जाता है । यह दूसरे शरीर की आत्मा द्वारा संचालित होने लगता है, पहले वाले शरीर की आत्मा के कोई लक्षण, हृदय प्रत्यारोपण के पश्चात् दूसरे शरीर में परिलक्षित नहीं होते। क्या यह माना जाए कि आत्मा का निवास मात्र हृदय तक ही सीमित नहीं है ? आज वैज्ञानिकों ने मरणासन्न् व्यक्ति के शरीर में मानव निर्मित कृत्रिम हृदय लगाकर उसके जीवन को कुछ माह तक बढ़ाने में सफलता प्राप्त की है। "*

विद्युत उपकरण तथा मानव शरीर का तुलनात्मक अध्ययन इस ओर इंगित करता है कि विद्युत उपकरण की क्रियाविधी में जो महत्व विद्युत ऊर्जा स्त्रोत का है वही महत्व सजीव शरीर में आत्मा का है। एक विद्युत उपकरण बाह्य विद्युत स्त्रोत से विद्युत ऊर्जा लेकर अपेक्षित कार्य करता है तथा एक सजीव शरीर आत्मा की उपस्थिति में अपेक्षित क्रियाओं को अंजाम देता है।

पता - ड़ीएवी पब्लिक स्कूल एसईसीएल छाल
जिला - रायगढ़ , छत्तीसगढ़- 496665

"अस्तु जियो मर्यादित जीवन"

रामनवमी पर विशेष

मर्यादा में है मानव जीवन का मधु-माधुर्य भरा।
जीवन का रस है, सुगंध है, शिवम् सत्य सौन्दर्य खरा॥
जो मर्यादा में रहके जीता, वह गरिमा-गौरव पाता।
पुरुषों में पुरुषोत्तम, श्रद्धा भाजन बनता, पूजा पाता॥
बड़ा सरल है सुविधाओं में मर्यादित होकर रह पाना।
किन्तु कसौटी है विपत्ति में मर्यादा से न डिग पाना॥
जिसमें कुसमय में, विपदा में, आत्म नियंत्रण निखरा।
उसका जीवन ही खिलता है, शिवम् सत्य सौन्दर्य भरा॥
राम, राज्य अभिषेक सूचना पाकर के भी रहे सहज ही।
वन का जब आदेश मिला था, तब भी वैसे के वैसे ही॥
उनकी मुख की मुस्काहट में कोई फर्क नजर नहीं आया।
स्वीकारा सप्रेम सहज, मर्यादित रहकर उसे निभाया॥
वचनों की मर्यादा राखी, सहज सुतंलन योग धरा।
वन में ऋषि-मुनियों की रक्षा की, उनका दुख दर्द हरा॥
जब जीवन मर्यादा में बंधता, सौन्दर्य निखर आता है।
मर्यादा से गिरते ही वह सब सुख चैन बिखर जाता है॥
राक्षसों के पास स्वर्ण था, किन्तु न थी उनमें मर्यादा।
खाना, पीना, मौज उड़ाना, ही था जीवन में आमादा॥
इससे ही अशान्ति, तम, तामस मय था, जीवन क्लेश भरा।
पाश्चात्य जीवन शैली में है प्रभाव इसका गहरा॥
प्रकृति की प्रत्येक वस्तु है, जब तक मर्यादा में रहती।
तब तक ही कल्याण दायिनी होकर जन मन रंजन करती॥
सरिता, पवन, अग्नि की लपटें, विद्युत अरु परमाणु शक्तियाँ।
मर्यादा तजतेही बनती, सर्वनाश की नृत्य नतियाँ॥
असमय ही गहराती, लाती प्रलय दृश्य दुख-दर्द भरा।
अस्तु जिओ मर्यादित जीवन, शिवम् सत्य सौन्दर्य भरा॥

- दयाशंकर गोयल, १५५४, डी, सुदामा नगर, इंदौर, (म.प्र.) पिन - ४५२००९

अन्वेषणात्मक

'वैदिक धर्म के प्रति सच्ची श्रद्धा रखने वाले अन्य मतों के अनुयायी'

– मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द पौराणिक माता–पिता की सन्तान थे जिन्होंने सत्य की खोज की और जो सत्य उन्हें प्राप्त हुआ उसे अपनाकर उन्होंने अपनी पूर्व मिथ्या आस्थाओं व सिद्धान्तों का त्याग किया। सत्य ही एकमात्र मनुष्य जाति की उन्नति का कारण होता है, अतः उन्होंने सत्य को न केवल अपने जीवन में स्थान दिया अपितु अपने गुरू विरजानन्द सरस्वती व ईश्वर की प्रेरणा से उसका दिग–दिगन्त प्रचार भी किया। महर्षि दयानन्द ने चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की पंचमी के दिन मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की जिसका उद्देश्य सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करना था। इस सत्य सनातन वैदिक धर्म की प्रमुख विशेषता यह है कि यह सत्य को स्वीकार करता था और असत्य का खण्डन करता था जिसकी प्रेरणा ईश्वरीय ज्ञान वेद व प्राकृतिक नियमों सहित मनुष्यों को अपनी आत्मा से मिलती है। महर्षि दयानन्द के ज्ञान से पूर्ण विचारों, उपदेशों व सत्य सिद्धान्तों को अनेक लोगों ने सुना, समझा, जाना व पढ़ा और शुद्ध व पवित्र ज्ञानयुक्त बुद्धिवाले लोग आर्यसमाज के अनुयायी बनने लगे। एक बहुत बड़ी संख्या उनके जीवनकाल में उनके अनुयायियों की हो गई थी। यह संख्या निरन्तर बढ़ती रही। आर्यसमाज द्वारा प्रचारित वैदिक धर्म को अपनाने वाले न केवल पौराणिक हिन्दू ही होते थे अपितु अन्य मतों के अनुयायी भी होते थे जो आर्यसमाज के सत्य सिद्धान्तों और उनके मानवजाति के लिए कल्याणप्रद होने के कारण उसे अपनाते थे। आज के लेख में हम एक सिख बन्धु सरदार सुचेतसिंह जी का परिचय दे रहे हैं जिन्होंने मन–वचन–कर्म से आर्यसमाज को अपनाया। एक अन्य श्री हाजी अल्लाह रखीया रहमतुल्ला जी, मुम्बई मुस्लिम बन्धु हैं जिन्होंने अपने मत में रहकर भी आर्यसमाज के सत्य सिद्धान्तों के प्रति सच्ची श्रद्धा व निष्ठा का प्रेरणादायक उदाहरण प्रस्तुत किया, उनका परिचय भी लेख में प्रस्तुत है। यह दोनों सत्य घटनायें वा जीवन–परिचय सिख मत में जन्में और आर्यसमाज के निष्ठावान अनुयायी बने स्वामी स्वतन्त्रानन्द द्वारा लिखित हैं जिनका संकलन 'इतिहासदर्पण' नामक पुस्तक में आर्यसमाज के विद्वान प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु ने प्रकाशित किया है।

सरदार सुचेतसिंह जी का यह परिचय स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने सन् 1942 ई. में लिखा था। सरदार सुचेतसिंह जी जिला गुरदासपुर में छीना ग्राम के निवासी थे। इस ग्राम में प्रधानता जाटों की है और उनका गोत्र छीना है। इसी कारण ग्राम का नाम भी छीना है। आप नम्बरदार, जैलदार, डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के सदस्य व आनरेरी मजिस्ट्रेट के पद पर रहे, अतः जिले में प्रख्यात थे। इस जिले में सरदार विशनसिंहजी रईस भागोवाल आरम्भ समय के आर्यसमाजियों में से थे। उनके संग से ही आप आर्यसमाजी बने थे। आप गुरदासपुर जिले के वेद प्रचार मण्डल के अध्यक्ष थे। आपकी रूचि वेद–प्रचार में अधिक थी। आप प्रायः आर्यसमाज के उत्सवों में सम्मिलित हुआ करते थे। आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के भी सदस्य थे। आपके सन्तान नहीं थी। पत्नी का देहान्त होने पर आपने दूसरा विवाह भी नहीं किया था। आपके एक भ्राता थे, जिनका स्वर्गवास हो गया था। गष्हकष्त्य उनकी भावज ही संभालती थी। उसके भी कोई सन्तान न थी।

सम्बन्धियों ने श्री सुचेतसिंहजी की सम्पत्ति के लोभ से उनको मार दिया, परन्तु पुलिस ने परिश्रम करके पूरा–पूरा पता लगा किया। उनके मारे जाने पर उनकी भावज भी अपने भाई के पास चली गई, वहां जाते समय वह सम्पत्ति भी अपने साथ ले–गई। उस सम्पत्ति में श्री सुचेतसिंहजी के कागज पत्रादि भी थे। उनके पत्रों में एक पत्र उनके हाथ का लिखा मिला जो उनकी इच्छा को प्रकट करता था। उनकी भावज और भावज के भाई अनपढ़ थे। उन्होंने वे कागज एक व्यक्ति को दिखाये ताकि पता हो उनमें क्या लिखा है? उस व्यक्ति ने जब कागज पढ़े, उसे वह कागज भी मिला जिसमें उनकी इच्छा लिखी थी। उसने आकर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में सूचना दी। सभा ने वह पत्र प्राप्त कर लिया और जब देखा तो उसमें लिखा था कि मेरी सब चल तथा अचल सम्मत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को मिले और वह उसकी आय से जिले में वेद–प्रचार करे और दो व्यक्तियों को जो उसकी सेवा किया करते थे पांच पांच रूपये प्रमिास उनके जीवनपर्यन्त दिये जाएं।

सरदार सुचेतसिंह जी की भूमि का श्री सरफजल हुसैन जी 80 सहस्र देते थे। श्री सरफजल हुसैन पंजाब के एक प्रख्यात राजनेता थे और मन्त्री भी रहे। वह छीना के पास बटाला के निवासी थे। उस समय के हिसाब से वर्तमान में यह धनराशि 1 व 2 करोड़ रूपये लगभग सकती है। सरदार सुचेतसिह जी उस समय उनसे 1 लाख रूपये मांगते थे। इस

प्रकार एक लाख या 80 हजार की सम्पत्ति सरदार सुचेतसिंह जी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को वेद–प्रचार के लिए लिखकर दे गये। तब उस भूमि आदि सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए सभा ने न्यायालय की शरण ली थी। सरदारजी का एक बाग छीना–स्टेशन के साथ ही है जो जिले में अच्छे बागों में समझा जाता था। छीना अमृतसर से पठानकोट को जाते समय बटाला और धारीवाल के बीच का स्टेशन है। इस पर टिप्पणी करते हुए आर्य विद्वान प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने लिखा है कि गुरदासपुर जिला आमों के बागों के लिए विख्यात रहा है। यह बाग उन्होंने भी देखा है। वह वहां सरदारजी की स्मृति में बसन्त मेले पर प्रचारार्थ जाया करते थे। उनके अनुसार सभा ने वहां की भूमि वा बाग, सब कुछ, बेच दिया है। उनके अनुसार प्रचार में सभाओं की रुचि नहीं है। ऐसी ही स्थिति हमने अपने नगर में भी देखी है। पुराने समय में लोग आर्यसमाजों को अपनी बड़ी–बड़ी सम्पत्तियां दान देते थे। सामान्य सदस्य इन कार्यों में रूचि नहीं लेते और चतुर अधिकारी इसका विवरण वार्षिक आयव्यय में भी प्रकाशित नहीं करते। यह सम्पत्तियां कब किसको किस मूल्य पर बेच दी जाती है, सदस्यों को पता ही नहीं चलता। इनकी सूचना सम्पत्तियों की स्वामिनी प्रादेशिक सभा को भी नहीं दी जाती। इससे प्राप्त धन का भी किसी को पता नहीं होता। ऐसी अनेक आशंकायें स्थानीय स्तर पर हमें भी हैं।

इस प्रकार सुचेतसिंह जी अपनी सारी सम्पत्ति आर्य–प्रतिनिधि–सभा को दे गये और जीवनभर आर्यसमाज के प्रचार में भाग लेते रहे। साधारण रीति से पंजाब में ग्रामों में प्रचार अम्बाला कमिश्नरी में ही अधिक है। शेष पंजाब के ग्रामों में प्रचार की ओर किसी का ध्यान ही नहीं है और यदि प्रचार किया जाए तो प्रत्येक जिले में सफलता प्राप्त हो सकती है। परन्तु सफलता उसी समय होगी जब दयानन्द के प्रचारक दयानन्द के चरण–चिन्हों पर चलकर काम करें अथवा सरदार सुचेतसिंहजी जैसे वेद–प्रचार के प्रेमी हों जो अपना समय और सम्पत्ति वेद–प्रचार पर निछावर करनेवाले हों। इन पंक्तियों का लेखक सरदार सुचेतसिंह जी की ईश्वर–वेद–दयानन्द जी की भक्ति पर मुग्ध है और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी द्वारा लिखित श्री हाजी अल्लाह रखीया रहमतुल्लाजी मुम्बई का परिचय भी प्रस्तुत है। श्री हाजी साहिब कच्छ (गुजरात) के रहनेवाले थे और मुम्बई में सोने का व्यापार किया करते थे। आप धार्मिक दृष्टि से आर्यसमाजी थे और सर्वदा कहा करते थे कि संसार में धर्म तो वैदिक धर्म ही है। वे आर्यसमाज के सत्संग में नियमपूर्वक आया करते थे। वे आर्यसमाज के सिद्धान्तों से पूर्णतया परिचित थे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी को श्री नन्दकिशोर चौबे ने बतलाया था कि एक बार एक स्नातक ने कहा "किसी को कुछ पूछना हो तो पूछ ले।" तब हाजी जी ने एक प्रश्न किया। स्नातकजी ने उसका उत्तर दिया। तब आपने कहा कि यह उत्तर ठीक नहीं है। स्नातकजी ने कहा, "ठीक है।" हाजीजी ने सत्यार्थप्रकाश मंगवाया और दिखाया कि जो कुछ वह कहते हैं, वही ठीक है। पुस्तक में उनका मत देखकर आर्यसमाजी लज्जित हुए। हाजीजी ने कहा, "आपने तप किया है। जंगल में रहे हैं और गुरुओं के पास रहे हैं, परन्तु आपने ऋषि दयानन्द लिखित वैदिक सिद्धान्तों का परिचय प्राप्त नहीं किया।"

आप सर्वदा विद्यार्थियों को पुस्तकें और छात्रवृत्ति दिया करते थे। निर्धनों की सहायता किया करते थे। कोई कहता था कि आप शुद्ध क्यों नहीं होते तो आप उत्तर दिया करते थे, "मैं अशुद्ध नहीं हूं।" आप आर्यसमाज में कई बार अपने पुत्रों को भी साथ लाया करते थे। आपने मरते समय पुत्रों को धन देकर लाखों का ट्रस्ट बनाया जिससे छात्रों की सहायता और रोगियों की चिकित्सा की जाये। आर्यसमाज ने जब मन्दिर के पिछले भाग में मकान बनवाया और वह बनकर तैयार हो गया तब श्री विजयशंकरजी, प्रधान ने साप्ताहिक सत्संग में कहा कि इस मकान के बनवाने में आर्यसमाज पर ऋण हो गया है। अब अन्य कार्यों के साथ–साथ आर्यसमाज को यह ऋण भी उतारना होगा। आपने उठकर पूछा कि आर्यसमाज पर कितना ऋण है तो प्रधानजी ने कहा पांच सहस्र रूपये (रूपये 5,000.00) है। आपने कहा, "मेरी दुकान से आकर ले–लो।" वे गये। आपने प्रधानजी को 5,000.00 का चैक दे दिया। उस मकान पर जो शिला लगाई गई है, जिस पर दानियों के नाम हैं, उनमें सबसे प्रथम हाजी जी का ही नाम है। आपके नाम से प्रत्येक व्यक्ति उनको वैदिक धर्मी नहीं समझेगा, परन्तु हाजी अल्लाह रखिया रहमतुल्ला जी उतने ही वैदिक धर्मी थे जितना कि कोई वैदिक धर्मी हो सकता है।

हमने इतिहासदर्पण पुस्तक का अध्ययन कर हमें भी जीवन में किसी अच्छे कार्य को करने की प्रेरणा मिल सकती है। यदि इसे पढ़कर कोई व्यक्ति जीवन में बुरा काम न करने का भी व्रत ले ले, तो भी उसका कल्याण ही होगा।

पताः 196 चुक्खूवाला–2 देहरादून–248001

स्वास्थ्य चर्चा

– रसवैद्य डॉ. प्रेमदत्त पाण्डेय,
सम्पादक निरोगधाम,
जवारा कम्पाउण्ड, इंदौर, (म.प्र.)

ग्रीष्म ऋतु 'आदान काल' की चरम सीमा होती है याने इस काल में सूर्य पूरी तेजी पर होता है और उसकी प्रचण्ड किरणें संसार के जलीय अंश का शोषण करती है। जिससे नदी, तालाब, झील का पानी सूख जाता है, वृक्षों की हरियाली नष्ट होती है और प्राणियों के शरीर का जलीयांश भी कम होता है जिससे प्यास का अनुभव होता है , इस ऋतु में दो बातों का ख्याल सबसे ज्यादा रखना स्वास्थ्य-रक्षा के लिए जरुरी होता है। पहली बात, किसी भी कारण से शरीर में जलीयांश की कमी (Dehydration) नहीं होने पाये और दूसरी बात, पेट खराब न हो याने अपच और कब्ज की स्थिति न बनने पाये।

आहार – ग्रीष्म ऋतु में हमें ऐसा आहार करना चाहिए जिसमें मीठे (मधुर रस), शीतल प्रकृति के, चिकनाई वाले (स्निग्ध), रसीले पदार्थों को शामिल किया गया हो। मौसमी फलों का यथाशक्ति सेवन करना हितकारी होगा। नमकीन, खटाईयुक्त, कटु रस वाले तथा गरम प्रकृति के पदार्थ, तले हुए और तेज मिर्च मसाले वाले पदार्थ का सेवन जितना कम करें उतना अच्छा है। जो लोग धूम्रपान, मद्यपान, मांसाहार और मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं उन्हें ग्रीष्म ऋतु में कई प्रकार के कष्ट और रोग हुआ करते हैं। आप इन सबके सेवन से हमेशा दूर ही रहें। भोजन में हलके और सुपाच्य पदार्थों का ही सेवन करें। शाम के भोजन में दही, केला, बेसन की चीजें, अरबी, बेगन और तले पदार्थों का सेवन न करें। सम्भव हो सके तो रात को सोने से आधा घण्टा पहले, जबकि शाम का खाना खाये दो घण्टे हो चुके हों, एक गिलास दूध और १-२ चम्मच शुद्ध घी का सेवन करना चाहिए। इसके बाद कुल्ले करके मुंह साफ कर लें और आधा घण्टा कुछ काम या पढ़ाई लिखाई करें फिर सो जाएं। इन दिनों एसिडिटी (अम्लता) या हायपरएसिडिटी (अम्लपित्त) पेट में जलन, पेशाब में जलन, खूनी पेचिस, मुंह में छाले, कब्ज होना आदि व्याधियाँ गलत ढंग से आहार करने की वजह से ही होती है। ऐसी स्थिति में हो तो शाम के भोजन में कुछ दिन तक चावल एवं मूंग की दाल की खिचड़ी का ही सेवन करना चाहिए। भोजन के बाद दिन में एक बार Dumex कम्पनी का बना Becosule Capsule १५ दिन तक सेवन करें। दोनों वक्त के भोजन के बाद दो चम्मच झण्डू पंचारिष्ट समभाग पानी में मिला कर पीयें। प्रत्येक कौर खूब अच्छी तरह चबा कर ही निगला करें।

चाय, सिगरेट, तम्बाकू खाने वालों को ऐसी शिकायतें अक्सर हुआ करती है। आप इनका सेवन करना शुरु ही न करें तो जीवन भर इनके जहरीले प्रभाव से बचे रहेंगे। दिन में घण्टे-घण्टे या आधा घण्टे से १-१ गिलास मीठा नीबू पानी (शिकंजी) या कोई मीठा शरबत पीना चाहिए। एक गिलास ठण्डे पानी में जरा सी ग्लूकोज घोल कर पीने से घबराहट कम होती है और शरीर में चुस्ती फुर्ती मालूम होती है। सत्तू को मीठा और पतला करके सेवन करना भी हितकारी होता है। दोपहर बाद फलों में पके तरबूज, खरबूजा, सन्तरा, हरी नरम ककड़ी, केला आदि कोई भी एक मौसमी फल जरुर खाना चाहिए। फ्रीज में रखा पानी पीने की आदत न डालें। पीना चाहें तो थोड़ी देर तक बाहर रख कर उसकी ठण्डक कम करके पिया करें। फ्रीज का पानी पीने से गले में खराश, टांसिल्स में दर्द, सर्दी, जुकाम और अपच होने की शिकायतें होती है। मटके या सुराही का पानी पीना ही श्रेष्ठ है। ग्रीष्म ऋतु में उड़द की दाल सरसो का साग, सरसों का तेल, खट्टा खासा दही, लहसून, शहद, बेसन के पदार्थ और ज्यादा उष्ण प्रकृति के पदार्थों का सेवन नहीं करना चाहिए। कच्चा नारियल और इसका पानी, सौंफ, मिश्री मक्खन आदि सेवन करना हितकारी होता है।

ग्रीष्म ऋतु में भूख से एक रोटी कम ही खाना अच्छा होता है ज्यादा खाना नहीं, इसलिए इन दिनों अधिक मात्रा में भोजन न करना ही अकलमन्दी है। कम खाएँ लेकिन खूब

चबाकर खायें तो ज्यादा गुणकारी होता है। ज्यादा मात्रा में खाकर हजम न कर पाने से, थोड़ी मात्रा में खाकर अच्छी तरह हजम कर लेना अच्छा होता है। भोजन के अन्त में एक डकार आती है। यह डकार आते ही भोजन बन्द कर देना चाहिए। डकारते जाना और खाते जाना उचित नहीं। एक मोटा सिद्धान्त याद रखें कि कम खाना और गम खाना स्वास्थ्य की रक्षा करने वाले काम है। गर्मी के दिनों में सुबह उठ कर दांत मुंह साफ कर शौच जाने से पहले ठण्डा पानी पीना और रात को सोते समय मीठा दूध पीना हितकारी होता है। हो सके तो सुबह के पानी में नींबू निचोड़ कर और रात के दूध में १-२ चम्मच घी डाल कर सेवन करना चाहिए। यह उपाय कब्ज और पेट में बढ़ी हुई गर्मी नष्ट करता है।

विहार - इन दिनों तेज, धूप, गरम हवा और ज्यादा गरमी से बचाव करना चाहिए। घर से बाहर निकलें तो एक गिलास ठण्डा पानी पी कर निकले और सिर को तेज धूप से बचाने का उपाय करके निकलें ऐसा करने से लू नहीं लगती। इन दिनों यात्रा करना हो तो २-४ बताशे और देहरादून वाली अमृतधारा या इन्दौर वाली प्राण सुधा साथ रखें। कभी जी मचलाए, उल्टी जैसा जी करे, सिर दर्द हो तो २-४ बूंद दवा बताशे पर टपका कर खा लेने से तुरन्त आराम होता है। रात अगर देर तक जागना पड़े तो दस बजे के बाद हर घण्टे से १-१ गिलास पानी पीना चाहिए। इससे वात और पित्त कुपित नहीं हो पाते। बाहर से घर लौटने पर थोड़ी देर विश्राम करके पानी पीना चाहिए। लेकिन ग्रीष्म ऋतु में विशेषकर प्यास के वेग रोकना नहीं चाहिए। **शोषांग सादबा बाधिर्य सम्मोह भ्रम हृदयगदा:-** के अनुसार प्यास के वेग को रोकने याने पानी न पीने से मुंह सूखना, अंगों में शिथिलता, बहरापन, मूर्च्छा जैसी आना, चक्कर आना और हृदय को पीड़ा होना आदि परिणाम होते हैं।

इन दिनों सुबह जल्दी उठकर नित्यकर्मों से निवृत्त होकर विद्या अध्ययन करना और सूर्योदय से पहले थोड़ी दूर तक दौड़ना या टहलना चाहिए। स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला यह बेजोड़ और मुफ्त का उपाय है। सुबह सूर्योदय से पहले वायुमण्डल शान्त, शुद्ध, निर्विकार और प्राणवायुयुक्त होता है। इस वक्त वायु सेवन करने से हमारे फेफड़े शुद्ध और बलवान रहते हैं जिससे फिर दिन भर के दूषित और विषाक्त वायु मण्डल का हमारे फेफड़ों पर असर नहीं हो पाता और हम दिन भर चुस्त-दुरुस्त तथा फुर्तीले (Smart) बने रहते हैं। ख्याल रहे, इस नियम का पालन करने में आलस्य व लापरवाही कदापि न करें। याद रखें, सुबह जल्दी उठना तप है और रात को देर तक जागना ताप है। ग्रीष्म काल में प्रातः स्नान के बाद ही योगासन या हलका व्यायाम करें। दौड़ने कूदने और झटके से उठने बैठने वाले व्यायाम करते समय जांघिया या लंगोट पहनना चाहिए ताकि अण्डकोष (Scrotum) को झटका न लगे। व्यायाम हलका और कम मात्रा में ही करें जरूर। योगासन या व्यायाम करना शरीर को मजबूत और स्वस्थ रखने वाला मुफ्त का उपाय है। ●

"होगा जनकल्याण तभी"

आओ! हम दिनकर बन जाएँ, होगा जनकल्याण तभी।
सत्य धर्म का ध्वज फहराएं, होगा जनकल्याण तभी।
धन, यश, वैभव से जगमग है, ऊँचे ऊँचे महलों में,
झोपड़ियों में दीप जलाएं, होगा जन कल्याण तभी।
मन को जीतो, मंत्र बताकर, तन के हाथों हार गए,
ऐसे गुरु को पाठ पढ़ाएं, होगा जन कल्याण तभी।
केवल पूजा-पाठ किसी का भाग्य न परिवर्तित करता,
श्रम से जीवन को महकाएं, होगा जन कल्याण तभी।
महंगाई, भुखमरी, क्रूरता, दानवता से मुक्ति मिले,
दुर्जनता को मार भगाएं, होगा जन कल्याण तभी।
दुर्गब, गन्तव्य अलक्षित स्वस्थ न इक्कीसवीं सदी,
फूँक-फूँक कर कदम बढ़ाएं, होगा जन कल्याण तभी।
पृथ्वी, पर्वत, वायु, नीर, रवि है, साक्षात् देवता सम।
वातावरण 'विनम्र' सजाएं, होगा जनकल्याण तभी।

रचयिता : गौरीशंकर वैश्व 'विनम्र',
पता ११७ आदिलनगर, विकास नगर,
लखनऊ-२२६०२२

पुण्य स्मरण

१९ अप्रैल जन्म दिवस पर

डी.ए.वी. के संस्थापक : महात्मा हंसराज

- पं. लोचन कुमारार्य, दुर्ग

महात्मा हंसराज का जन्म पंजाब के होशियारपुर जिले के बजवाड़ा ग्राम में १९ अप्रेल १८६४ को एक परिश्रमी स्वाभिमानी परन्तु निर्धन व्यक्ति श्री चुन्नीलाल के घर में हुआ था। इनकी माता का नाम हरदेवी था। इनका बचपन घोर निर्धनता मे ही बीता। इनके अपने गांव में कोई स्कूल नहीं था। पिता निर्धन होते हुए भी शिक्षा के महत्व के जानते थे। इसी से इन्हें दूर दूसरे गांव में पढ़ने के लिए भेजते रहे। भगवान को इस बालक की अभी और परीक्षा लेनी थी १२ वर्ष के अल्पायु में ही पिता का साया सिर से उठ गया। कुछ माह बाद विवाह भी हो गया। पर ये विघ्न बालक हंसराज को अध्ययन से विमुक्त न कर पाये। बड़े भाई मुल्कराज लाहौर में नौकरी करते थे हंसराज पढ़ने के उन्हीं के पास चले गये। निर्धनता से संघर्ष करते हुए वहीं से उन्होंने मेट्रिक और बी.ए. की परीक्षा पास की।

१८७७ में स्वामी दयानन्द जी लाहौर पहुंचे। हंसराज ने उनके भाषण सुने उससे इतना ज्यादा प्रभावित हो गये कि इनके दिल में भौतिक सुख भोग की अपेक्षा देश सेवा की भावना अधिक प्रबल हो गयी। अतः इन्होंने अपना जीवन समाज सेवा के लिए निष्काम भाव से आर्यसमाज को अर्पित कर दिया। उस समय भारत के बहुत कम शिक्षण संस्थायें थीं, जो थी भी वे या सरकारी थे या ईसाइयों द्वारा संचालित थी। जिनमें शिक्षा प्राप्त युवक भारतीय संस्कृति से सर्वथा अछूते रहते या विमुख हो जाते। पंजाब के आर्यों ने इस कमी को अनुभव करते हुए लाला हंसराज जी की सहायता से लाहौर में १८८६ में प्रथम डी.ए.वी. स्कूल की स्थापना की और हंसराज जी को इसका मुख्याध्यापक बनाया। इन्होंने बिना किसी प्रकार का वेतन लेते हुए अपना सम्पूर्ण जीवन पहले डी.ए.वी. स्कूल और बाद में उसके कालेज बनने पर समर्पित कर दिया और अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए बड़े भाई मुल्कराज जी से ४० रु. मासिक लेते रहे। मां और पत्नी के सपने अधूरे रह गये इन्होंने एक देश सेवक का जो व्रत लिया उसे आजन्म निभाया। अपने अथक प्रयत्नों से डी.ए. वी. स्कूल को बहुत उन्नत किया। जहां उसमें छात्रों की संख्या की वृद्धि होती गयी वहां शिक्षा का स्तर भी उच्च से उच्चतर हो गया। इतिहास इस बात का गवाह है कि डी.ए.वी. स्कूल के विद्यार्थी हिन्दी, संस्कृत और धर्म शिक्षा में ही नहीं अपितु इंग्लिश, गणित, विज्ञान आदि सभी विषयों में युनिवर्सिटी की परीक्षा में ऊंचा स्थान प्राप्त करते थे। अस्तु।

वे नींव के ऐसे पत्थर थे जिन पर डी.ए.वी. कालेजों का सुदृढ़ निर्माण हुआ। आज उनकी नश्वर देह नहीं रही। परन्तु अपनी सेवाओं से आज भी हमारे दिलों में वे उसी मूर्धन्य स्थान पर विराजमान हैं। वे मरे नहीं मरकर भी अमर हो गये, और हमें सिखा गये कि अमर होने के लिए कैसे जीना चाहिए। आज आवश्यकता है उन जैसे तपस्वी और त्याग के आदर्शों की जिससे उनके चलाये हुए कार्य को आगे बढ़ाते हुए आज के छात्रों को उचित एवं सही शिक्षा देकर देश को आत्म निर्भर बनाया जा सके। यदि हम ऐसा कर सकें तो यही उस महान आत्मा के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

पता - आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.) ४९१००१

आर्यसमाज स्थापना दिवस

न होता, स्वराज्य सूर्योदय न ज्ञान का प्रकाश होता।
न वेद शास्त्र, न राम कृष्ण, न सत्य का विकास होता।।
होता हिन्द किन्तु अवैदिक मतवादियों से
पूर्ण आज होता। मिट जाता देश का गौरव,
यदि भूमण्डल पर आर्यसमाज न होता।।

सौजन्य - पं. लोचन कुमारार्य

पुण्य स्मरण

बलिदान दिवस ६ अप्रैल १९२९

• विश्वनाथ

हुतात्मा महाशय राजपाल की बलिदान-गाथा

सन् १९२३ में मुसलमानों की ओर से एक पुस्तक उन्नीसवीं सदी का महर्षि प्रकाशित हुई। यह पुस्तक महर्षि दयानन्द का बहुत घिनौना तथाअपमानजनक चित्रण था। उन्हीं दिनों मुसलमानों ने श्रीकृष्ण महाराज के सम्बन्ध में भी एक आपत्तिजनक पुस्तक प्रकाशित की। पुस्तक का नाम था "कृष्ण, तेरी गीता जलानी पड़ेगी।" पुस्तक के नाम से ही समझ सकते हैं कि इसमें क्या था। महाशय, राजपाल, महर्षि दयानन्द और योगेश्वर कृष्ण का अपमान नहीं सकते थे। उन्होने पुस्तक का उत्तर पुस्तक से देना उचित जाना। इन घिनौनी पुस्तकों का उत्तर देने के लिए १९२४ में 'रंगीला रसूल' प्रकाशित की।

यह पुस्तक उर्दू में थी जिसमें मुसलमानों के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब की जीवनी व्यंग्यात्मक शैली में दी गई थी, परन्तु घटनाएँ सभी इतिहास-संमत और प्रामाणिक थीं। पुस्तक में लेखक के नाम के स्थान पर 'दूध का दूध और पानी का पानी' छपा था। वास्तव में पुस्तक के लेखक पं. चमूपति एम.ए. थे जो आर्यसमाज के श्रेष्ठ विद्वान् एवं बाद में गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य बने थे। वे महाशय राजपाल जी के अभिन्न मित्र थे, उनकी अनेक पुस्तकें राजपाल जी प्रकाशित कर चुके थे। मुसलमानों की ओर से सम्भावित प्रतिक्रिया के कारण चमूपति जी इस पुस्तक पर अपना नाम नहीं देना चाहते थे। उन्होंने महाशय राजपाल जी से यह वचन ले लिये कि चाहे कितनी भी विकट परिस्थिति क्यों न बने वे किसी को भी इस पुस्तक के लेखक के रूप में उनका नाम नहीं बताएँगे। महाशय राजपाल जी ने इस वचन की रक्षा अपने प्राणों की बलि देकर की। चमूपति जी पर जरा भी आँच नहीं आने दी।

सन् १९२४ में यह मुकदमा शुरू हुआ और सन् १९२९ में राजपाल जी का बलिदान हुआ। इन पाँच वर्षों में उन्हें अनेक बार यह कहा गया कि आप असली लेखक का नाम बता दें तो हमें आपसे कोई शिकायत नहीं रहेगी। यह बात उस जमाने के प्रमुख मुस्लिम दैनिक-पत्र जमींदार में प्रकाशित हुई परन्तु महाशय राजपाल जी ने एक ही बात दोहराई कि इस पुस्तक के लेखन तथा प्रकाशन की पूरी जिम्मेदारी मेरी ही है, अन्य किसी को नहीं। उन्होने जो वचन दिया उसे अन्त तक निभाया। पुस्तक बिकती रही परन्तु उसके विरुद्ध कोई शोर न मचा। फिर हुतात्मा गांधी ने अपनी मुस्लिम-परस्त नीति में इस पुस्तक के विरुद्ध एक लम्बी टिप्पणी लिख दी। बस फिर क्या था, एक ओर कट्टरवादी मुसलमानों और मुल्लों ने राजपाल जी के विरुद्ध आंदोलन छेड़ दिया, दूसरी ओर सरकार ने उसके विरुद्ध सन् १९२३ में १५३(अ) धारा के अधीन अभियोग चला दिया। अभियोग चार वर्ष तक चलता रहा। राजपाल जी को छोटे न्यायालय ने डेढ़ वर्ष का कारावास तथा एक सहस्र रुपये जुर्माने का दण्ड सुनाया गया। इस आदेश के विरुद्ध सैशन में अपील करने पर कारावास के दण्ड में एक वर्ष की कटौती कर दी गई। इसके पश्चात् अभियोग हाईकोर्ट में गया। हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश कँवर दिलीपसिंह ने महाशय राजपाल को ससम्मान दोषमुक्त कर दिया।

पहला प्रहार

मुसलमान इस निर्णय से भड़क उठे और उन्होने राजपाल जी के विरुद्ध जानलेवा आन्दोलन छेड़ दिया, जिसके फलस्वरुप २६ सितम्बर १९२७ को उन पर खुदाबख्श नामक एक मुसलमान ने उनकी दुकान पर जो हस्पताल रोड पर स्थित थी, प्राणघातक आक्रमण किया। आक्रमणकारी एक पहलवान था। उसके हाथ से महाशय राजपाल के जीवन की सुरक्षा की कोई आशा न थी। परन्तु मारने वाले से बचाने वाला महाबली होता है, यह लोकोक्ति इस प्रसंग में सत्य सिद्ध हुई और स्वामी स्वतंत्रतानन्द जी महाराज और स्वामी वेदानन्द जी जो दैवयोग से वहाँ उपस्थित थे, उन्होंने घातक

को ऐसा कसकर दबोचा कि वह अपने क्रूरतापूर्ण निश्चय में सफल न हो सका। तथापि महाशय राजपाल बहुत बुरी तरह घायल हुए। घातक के विरुद्ध अभियोग चला और उसे सात वर्ष के कारावास का दण्ड मिला।

स्वामी सत्यानन्द जी पर आक्रमण

महाशय राजपाल अपने घावों के कारण अस्पताल में ही थे कि उसी दुकान पर जिसमें महाशय राजपाल जी को घायल किया गया था, स्वामी सत्यानन्द जी बैठे थे। रविवार, ८ अक्तूबर १९२७ को अब्दुल अजीज नामक एक मुसलमान ने उन्हें महाशय राजपाल समझ कर पीछे से, एक हाथ से चाकू व दूसरे हाथ में उस्तरे से प्राणघातक प्रहार कर दिया। घातक स्वामी जी घायल करके भागना ही चाहता था कि अद्‌भुत शौर्य का प्रदर्शन करते हुए पड़ोसी दुकान वाले महाशय नानकचन्द जी कपूर ने हत्यारे को पकड़ने का यत्न किया। इस प्रयास में वे भी घायल हो गए। उसे चौदह वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड और तदनन्तर तीन वर्ष के लिए शान्ति की गारण्टी का दण्ड सुनाया गया।

अंतिम प्रहार :-

महाशय जी गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर गए हुए थे। वहाँ से पांच अप्रैल को लाहौर लौटे। ६ अप्रैल १९२९, शनिवार के दिन दोपहर के समय वे अपनी दुकान में आराम कर रहे थे। उनका एक कर्मचारी पुस्तकों को व्यवस्था से रख रहा था। इल्मदीन नामक एक मुसलमान युवक छुरा छिपाए हुए दुकान के भीतर आया। क्रूर हत्यारे ने आते ही लेटे हुए महाशय राजपाल जी के सीने में दोधारी छुरा घोंप दिया। वीर राजपाल जी का तत्काल प्राणान्त हो गया। हत्यारा अपनी जान बचाने के लिए बाहर भागा। महाशय जी का कर्मचारी भी शोर मचाता हुआ उसके पीछे दौड़ा। क्रूर हत्यारा भागकर महाशय सीताराम जी के लकड़ीटाल में जा घुसा। सीताराम जी के नवयुवक साहसी सपूत विद्यारत्न जी ने हत्यारे को कसकर अपनी भुजाओं में पकड़ लिया। इतिहास ने अपने आपको आज पुनः दोहराया। दिल्ली में अब्दुल रशीद ने वयोवृद्ध रुग्ण संन्यासी श्रद्धानन्द पर तीन गोलियाँ चलाकर भागने का प्रयत्न किया तो वीर धर्मपाल विद्यालंकार ने वहीं उसको धर दबोचा था।

अंतिम यात्रा :-

महाशय जी का पोस्टमार्टम तो उसी सायंकाल हो गया था परन्तु लाहौर के हिन्दुओं ने यह निर्णय लिया था कि अगले दिन हुतात्मा की शवयात्रा धूमधाम से निकाली जाए। पुलिस के मुसलमान अधिकारियों ने राज्याधिकारियों के मन में निराधार भय का भूत बिठा दिया कि यदि शवयात्रा निकली तो शहर में दंगा-फसाद हो जाएगा। डिप्टी कमिश्नर ने रातों-रात लाहौर में धारा १४४लगाकर सरकारी अनुमति के बिना जलसे-जुलूसों पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

शवयात्रा कैसी थी –

महाशय जी के बलिदान से आर्य हिन्दू-जाति में ऐसा जोश पैदा हुआ जो देखते ही बनता था। शवयात्रा के समय यह जोश देखकर सब में उत्साह का संचार हो रहा था। अनुमान लगाया गया कि पच्चीस हजार लोग शव-यात्रा में सम्मिलित होकर शमशान-भूमि पहुंचे थे। हिन्दुओं ने बड़ी श्रद्धा से अपने मकानों की छतों से हुतात्मा के शव पर पुष्प-वर्षा की।पंजाब के सुप्रसिद्ध पत्रकार व कवि, महाशय नानकचन्द जी नाज ने तब एक कविता लिखी थी जिसकी ये पंक्तियाँ उस समय के जोश का यथार्थ चित्रण करती है :

फख्र से सर ऊँचे आस्माँ तक हो गए,
हिन्दुओं ने जब तेरी अर्थी उठाई राजपाल।
फूल बरसाए शहीदों ने तेरी अर्थी पै खूब,
देवताओं ने तेरी जय जय बुलाई राजपाल।
हो हर एक हिन्दू को तेरी ही तरह दुनिया नसीब,
जिस तरह तूने छुरी सीने पै खाई राजपाल।
तेरे कातिल पर न क्यों इस्लाम भेजे लानतें,
जब मुजम्मत कर रही है इक खुदाई राजपाल।
मैंने क्या देखा कि लाखों राजपाल उठने लगे,
दोस्तों ने लाश तेरी जब जलाई राजपाल।

सौजन्य : राजपाल एण्ड सन्स, १५९०, मदरसा रोड,
पता - कश्मीरी गेट, दिल्ली-११०००६

पितृदेवो भव

घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल

- अर्जुनदेव चड्ढा

माता–पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों को सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूलकर, जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख–सुविधाएं उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात वे सन्तानें महानगरों या बड़े–बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हीं माता–पिता को घर पर छोड़ देते हैं हताश एवं एकाकी जीने को। जिनकी पथराई आंखें हमेशा उनका इंतजार करती रहती हैं। इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता–पिता जिस बहू को डोली में बिठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा–बहू अपनी निजी जिंदगी में सबकुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर के बुजुर्ग माता–पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता–पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं। अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता–पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र–पुत्रियों को प्रतिपल चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो इत्यादि बातों द्वारा अपने–अपने माता–पिता को हतोत्साहित करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृत्ति कि जबतक माता पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ हैं तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान सम्मान एवं देखभाल। और ज्योंही वे वृद्ध रिटायर अथवा कार्य करने में असमर्थ हुए नहीं कि वे माता–पिता संतानों को पर्वत से अधिक भारी लगते हैं। फलस्वरूप प्रारंभ होता है तानों, उलाहानों के माध्यम से प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नारकीय बन जाता है। ये चन्द वे उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर में हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक, बाजारवाद के आधार पर विकसित समाज ने मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थिति पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ी है। आज अधिकांश घरों में बूढे माता–पिता, दादा दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख–सुविधाओं की चाह, स्वतंत्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सबकुछ होते हुए भी निराश्रित के समान घर में रहने को मजबूर कर दिया है या फिर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है।

घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनों की उस आधुनिक भौतिकतावादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्व मानती है। अपने विकास में बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्रवस्था का शिकार है तो सत्य मानिये वर्तमान के युवा का भविष्य अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढोत्तरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चों ने भी स्पश्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्ध वृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते–पोती, बेटा, बहू, घर–परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरंतर बैचेनी देता है।

बुजुर्गों को उपेक्षा नहीं सम्मान चाहिए – ये वृद्ध परिवार से धन दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं। इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करे। तानों, उलाहनों के अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाए।

समझे परिवार की अवधारणा – बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है। आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति–पत्नि और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता–पिता, सास–ससुर उपेक्षित कर दिये जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति–पत्नि एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता–पिता, बुजुर्ग, दादा–दादी का भी समावेश है।

आज आवश्यकता है उस पुरातन धारणा को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगे तो स्वत: ही इनके प्रति आपने मन में प्रेम स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जायेंगे।

संस्कारों के संवाहक हैं बुजुर्ग – घर, परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कारों को एक पीढी से दूसरी पीढी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है।

स्वतंत्रता अधिकार तो वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है – प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है अधिकार चाहता है और युवा दंपत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतंत्रता के नाम पर बुजुर्गों की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतंत्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर परिवार से वृद्धों की उपेक्षा ही का परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह विच्छेद की संख्या बढती जा रही है। अत: स्वतंत्रता के साथ घर में बुजुर्गों के महत्व को समझें उनकी सेवा आपका कर्त्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना हैं वृद्धावस्था – आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ रही है। हम कम्प्यूटर, इंटरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं किन्तु ऐसा नहीं है ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज दे सकते हैं अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता। इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गों से। क्योंकि उनके पास जीवनभर का अनुभव होता है तो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाएं हैं जो ये बतलाती है कि बुजुर्गों के अनुभव किस प्रकार उपयोगी हैं। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइ–क्लोपीडिया होती है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें – आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं है। हमारी परम्परा एवं संस्कृति में वृद्धों का महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। उनके सम्मान एवं सेवा की बात कही गई है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता पिता एवं वृद्धों के प्रति कर्त्तव्यों का ज्ञापक है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता–पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं

सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु विद्या, यष एवं बल ये चार वस्तुएं नित्य प्रतिदिन बढती है। मानव विधान के प्रथम निर्माता महर्षि मनु ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता–पिता का अपमान नहीं करना चाहिए। इसलिए हमेषा उनका सम्मान करें।

वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा को रूबरू होना पड़ेगा, किसी शायर ने कहा है कि जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढापा देखा। इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्व देंगे उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप आज अपने वष्द्घों की उपेक्षा करेंगे तो कल आपके किशोर पुत्र–पुत्रियां उपेक्षा करेंगे।

हम मनुष्य हैं, केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पेंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितनी आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं अत: अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएं उन्हें सम्मान दें सेवा करें।

पता 4–प– 28, विज्ञाननगर
कोटा, 324005

कविता

स्वार्थों की पगडण्डी पर

स्वार्थों की पगडण्डी पर
दौड़े चले जा रहे हैं सब
शमशानों में पिकनिक मनाकर
बारूद से खेल, खेल रहे हैं सब।

गोलियों की गड़गड़ाहट में
संगीत ढूंढ रहे हैं,
ये नादान आदमी
आदमियत का जनाजा उठाये जा रहे हैं,
देखो धर्म का कैसा गीत गुनगुनाये जा रहे हैं।

सड़ी–गली परम्पराओं में बंधकर
अंधेरे से करके दोस्ती
शहर के शहर उजाड़े जा रहे हैं
जन्नत और हूरो के चक्कर में लोग
जिंदगी को बम से उड़ाये जा रहे हैं।

पता नहीं कौन सा है भगवान वो...
जो लहू देखकर होता है खुश
और उसकी खुशी में,
लोग महकते गुलशनों को उजाड़ रहे हैं
एक दूसरे की गर्दनों पर छुरियां चला रहे हैं।

स्वार्थों की पगडण्डी पर
दौड़े चले जा रहे हैं सब
बारूद के ढेरों पर बैठकर
आग जलाये जा रहे हैं सब।

- मुकेश वर्मा (कलाकार)
ग्राम रावली, तारोली, जनपद (आगरा) २८३१११

आरोग्य जगत

मोटापा और होमियोपैथी चिकित्सा

– डॉ. विद्याकान्त त्रिवेदी
(होमियोपैथिक चिकित्सक)
मोबा. : ९८२६५११९८३, ९४२५५१५३३६

मोटापे को अधिकृत लोग इसे इक्कीसवीं शताब्दी की सबसे गंभीर सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में देखते हैं। मोटापा वो स्थिति होती है, जब अत्यधिक शारीरिक वसा शरीर पर इस सीमा तक एकत्रित हो जाती है कि वह स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव डालने लगती है। मनुष्य को प्रकृति की ओर से संतुलित और सुडौल शरीर मिलता है, पर वह गलत रहन-सहन, बुरी आदतें तथा खान-पान से अनियमितता के कारण इस शरीर को बेडौल बना लेता है। आधुनिक समय में यह बीमारी के रूप में बहुत तेजी से फैल रहा है। मोटापे से मधुमेह, उच्च रक्तचाप, दिल की बीमारी, जोड़ों का दर्द, गठिया, घुटनों में दर्द की संभावना भी अधिक होती है। आयु की सीमा भी घट सकती है।

पिछले २० वर्षों के दौरान वयस्कों के बीच मोटापे की समस्य दुनिया भर में काफी बढ़ी है, नये शोध के अनुसार अस्सी लाख से अधिक लोग मोटापे से ग्रसित हैं। यह वृद्धि केवल वयस्कों के लिए ही सीमित नहीं है, बल्कि युवा लोग १९८० के बाद तीन गुना इस समस्या से ग्रस्त है। यदि शीघ्र ही इस समस्या का समाधान नहीं किया गया तो संपूर्ण विश्व में सबसे ज्यादा लोग इस समस्या से ग्रस्त होंगे।

मोटापे का प्रमुख कारण :- अधिक उम्र में गर्भावस्था (जो बच्चों में मोटापे के लिए संवेदनशील कारण हो सकता है)। कम चलने और शारीरिक शिक्षा में कमी, अत्यधिक टेलीविजन देखना, अन्तः श्रावी विकास, गतिहीन जीवनशैली, अधिक चर्बीयुक्त आहार का सेवन करना। कम व्यायाम करना और स्थिर जीवनयापन। असंतुलित व्यवहार और मानसिक तनाव की वजह से लोग ज्यादा भोजन करने लगते हैं। शारीरिक क्रियाओं के सही ढंग से नहीं होने पर भी शरीर में चर्बी होने लगती है। बाल्यावस्था और युवावस्था के समय मोटापा वयस्क होने पर भी रह सकता है। अपर्याप्त नींद, अधिक धूम्रपान, मांसाहारी भोजन, अनुवांशिकता, कारों पर निर्भरता आदि।

होमियोपैथी उपचार :- होमियोपैथी चिकित्सा मोटापा एवं उसके विभिन्न पहलुओं का उपचार करता है। इन दवाओं से पाचन क्रिया सुदृढ़ होती है। अपच की क्रिया अच्छी होती है जिसकी वजह से मोटापा कम होता है। वजन घटाने के लिए कई लोग होमियोपैथी का सहारा लेते हैं। वजन घटाने के लिए होमियोपैथी उपचार सुरक्षित माना गया है एवं यह सभी उम्र के लोगों के लिए कारगार एवं उपयुक्त होता है। वजन घटाने के लिये होमियोपैथी में कई प्रभावी उपचार उपलब्ध है। वजन घटाने के पूर्व एक महत्वपूर्ण बात पर विचार अवश्य कर लेना चाहिए कि आपका वजन कितना है तथा आपके कितना वजन घटाने की जरुरत है। इसके लिए आपको होमियोपैथी चिकित्सक से मिलकर वजन कम करने का सबसे अच्छे विकल्प का परामर्श लेना चाहिए साथ ही उपचार प्रारंभ करने से पूर्व आपको यह भी जान लेना चाहिए कि आपको अपने जीवनशैली में क्या-क्या बदलाव लाना है। कई रोगियों को मेरे उपचार एवं सलाह से अत्यधिक लाभ मिला है एवं कई रोगियों का उपचार चल रहा है।

प्रमुख होमियो औषधियाँ :- कल्केकार्व, नसवोमिका, चायना, पल्साटिला, अर्जेन्ट्रमनाईट्रिकम, फाइटोलेक्का बेरी, हाईड्रस्टिस, कार्बोजेज आदि।

मोटापा कम करने के उपाय (पथ्य)- खाने में गेहूँ के आटे की चपाती बन्द करके जौ और चने के आटे की चपाती लेनी चाहिए। नींबू का रस गुनगुने पानी में निचोड़कर पीना चाहिए। मौसमी हरी सब्जियाँ का प्रयोग करना चाहिए। भूने चने, मूंगदाल, दलिया आदि का सेवन करने से फैट कम होता है। सुबह नाश्ते में अंकुरित अनाज लेना चाहिए। प्रतिदिन व्यायाम करना चाहिए।

अपथ्य :- मांसाहार, तेल से बनी हुई चीजें, चिकनाईयुक्त आहार का सेवन नहीं करना चाहिए। फास्ट फूड, जंक फूड, कचौरी, समोसे, पिज्जा, बर्गर, कोल्ड ड्रिंक का सेवन नहीं करना चाहिए। मानसिक तनाव से बचना चाहिए।

पता : त्रिवेदी होमियो औषधालय, टाटीबन्ध रायपुर (छ.ग.)

समाचार प्रवाह राजिम कुंभ में गूंजा-वेदों का नाद

राजिम। राजिम कुंभ में दिनांक २२ फरवरी से ७ मार्च २०१६ तक छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा एवं छत्तीसगढ़ स्थित समस्त आर्यसमाजों के संयुक्त तत्वावधान में राजिम की पावन भूमि पर विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत कथा का आयोजन किया गया।

दिनांक २२ फरवरी २०१६ को विश्व कल्याण महायज्ञ के उपरांत ईश्वर भक्ति विषय पर प्रभावशाली व्याख्यान एवं भजनोपदेश सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, कार्यालय मंत्री श्री दिलीप आर्य, उपमंत्री (रायपुर संभाग) श्री चतुर्भुज कुमार आर्य आदि सहित कई पदाधिकारी एवं अन्य आर्यजन उपस्थित रहे।

दिनांक १ मार्च २०१६ को दोनों समय यज्ञ एवं भजनोपदेश पं. सतीश सुमन (आर्य संगीतरत्न) मुजफ्फरनगर (उ.प्र.) पं. सुभाष राही ढोलकवादक के मधुर भजनोपदेश के द्वारा सुमधुर संगीत एवं वैदिक भगवत कथा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। आर्यसमाज के दूसरे नियम पर आधारित ईश्वर के स्वरुप विषयक प्रभावशाली व्याख्यान दिया गया। प्रोजेक्टर के माध्यम से सायंकाल ६ बजे से ८ बजे तक महर्षि दयानन्द की जीवनी एवं आर्य वीरों पर आधारित दृश्य श्रव्य माध्यम से वेदप्रचार का आयोजन किया गया, जो कि अत्यन्त सफल रहा। लगभग ८०० की लोगों की उपस्थिति रही।

दिनांक ३ मार्च २०१६ को दोनों समय विश्व कल्याण महायज्ञ एवं भजनोपदेश दिया गया। वैदिक गृहस्थाश्रम पर आधारित कार्यक्रम प्रोजेक्टर के माध्यम से सम्पन्न हुआ। जिसमें सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य, मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री जगबन्धु शास्त्री, श्री रामनाथ आर्य, श्री बीरबल आर्य (वैदिक प्रचारक), रायगढ़ जिले से लगभग ९ वानप्रस्थीगण सहित २७ आर्यजनों सहित अन्य श्रद्धालुगणों की उपस्थिति रही।

दिनांक ५ मार्च २०१६ को सभा के पदाधिकारी व सदस्यगण, आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के पदाधिकारी एवं आर्यसमाज टाटीबन्ध के पदाधिकारी, शिक्षक, शिक्षिकाओं व छात्राओं सहित १५० लोगों की उपस्थिति में दोनों समय विश्व कल्याण महायज्ञ एवं भजनोपदेश का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें आचार्य अंशुदेव आर्य, सभा कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य, आचार्य प्रेमप्रकाश शास्त्री, आचार्य जगबन्धु शास्त्री, श्री बीरबल आर्य, श्री रामनाथ आर्य आदि के सहयोग से कार्यक्रम सफल रहा। **राजिम कुंभ मेले में मुख्य आकर्षण सत्यार्थ प्रकाश रहा, जिसे मात्र दस रुपये में बिक्री किया गया लगभग ६०० सत्यार्थ प्रकाश सभा द्वारा बेची गई।**

इसी प्रकार दिनांक ६ मार्च २०१६ तक वेद प्रचार कार्यक्रम प्रभावशाली रहा, जिसमें अच्छी उपस्थिति रही। सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, सभा कोषाध्यक्ष श्री जोगीराम आर्य, उपप्रधान (रायपुर संभाग) श्री दयाराम वर्मा, उपमंत्री (रायपुर संभाग) श्री चतुर्भुज कुमार आर्य, पं. काशीनाथ चतुर्वेदी सहित अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन दिनांक ७ मार्च २०१६ को भव्य रुप से महाशिवरात्रि ऋषि बोध दिवस के रुप मनाया गया।

- निजी संवाददाता

एक शाम-शहीदों के नाम

बिलासपुर। रविवार दिनांक २० मार्च २०१६ सायं ७ बजे से रात्रि१०.३० बजे तक स्थान पं. देवकीनंदन दीक्षित सभा भवन, लाल बहादुर शास्त्री विद्यालय परिसर बिलासपुर में एक शाम-शहीदों के नाम संगीतमय व्याख्यान एवं शहीद परिवार का सम्मान कार्यक्रम अत्यन्त धूमधाम से सम्पन्न हुआ। अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव आदि को याद किया गया और उन लोगों के लिये कहा गया- "तुमने दिया देश को जीवन देश तुम्हें क्या देगा। अपना खून गरम करने को, नाम तुम्हारा लेगा।" आमंत्रित विद्वान् पं. कुलदीप विद्यार्थी जी क्रांतिकारी युवा वक्ता एवं कवि बिजनौर

शेष पृष्ठ क्र. ३३ पर

आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सौजन्य से

२० दिवसीय वैदिक भगवत कथा एवं विश्व कल्याण महायज्ञ सम्पन्न

महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर

दिनांक ९ से १३ मार्च २०१६ तक पांच दिवसीय विश्व कल्याण महायज्ञ एवं वैदिक भगवत कथा का आयोजन महिला आर्यसमाज जवाहर नगर रायपुर में आर्यसमाज बैजनाथ पारा रायपुर के सौजन्य से आयोजित किया गया, जिसमें पं. कुलदीप विद्यार्थी प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं वैदिक विद्वान् जो कि बिजनौर उत्तरप्रदेश से पधारे थे द्वारा सुसम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में आमंत्रित विद्वान् पूज्य स्वामी धर्मानन्द सरस्वती जी (गुरुकुल आश्रम आमसेना उड़ीसा), आचार्य रजनीकांत शुक्ल वेद शिक्षक, पं. संजय शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, पं. सूरज आर्य, पं. रोशन आर्य, पं. सुशील स्वामी पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर।

प्रतिदिन प्रातः ८ से १०.३० बजे तक दोपहर ३ से ६ बजे तक यज्ञ, भजन, प्रवचन कार्यक्रम में मुख्य यजमान श्रीमती एवं श्रीमान् नन्दलाल डोडेजा, श्रीमती एवं श्रीमान् अजय खेमका, श्रीमती एवं श्रीमान् हेमराज लक्खीचंद, श्रीमती एवं श्रीमान् अरुण कुमार गुप्ता, श्रीमती एवं श्रीमान् शिवप्रसाद आर्य। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री, श्री तापेश्वर कुमार शर्मा अंतरंग सदस्य सभा सहित अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। सहयोगी संस्थाएँ - आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर, आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर, आर्यसमाज संतोषीनगर रायपुर, आर्यसमाज टाटीबन्ध रायपुर, महर्षि दयानन्द सेवाश्रम टाटीबन्ध रायपुर।

आर्यसमाज मरौद एवं जानकीदेवी आर्य विद्यालय मरौद (धमतरी)

दिनांक १४ एवं १५ मार्च २०१६ को आर्यसमाज मरौद एवं जानकीदेवी आर्य विद्यालय मरौद में प्रातः ८.३० बजे से ११.३० बजे एवं सायंकाल ४ बजे से ७ बजे तक यज्ञ, भजन, वैदिक भगवत कथा का आयोजन श्री सोमप्रकाश गिरी सभा उपप्रधान एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सौजन्य से सम्पन्न हुआ, जिसमें आमंत्रित विद्वान् आचार्य अंशुदेव आर्य जी सभा प्रधान, यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य कर्मवीर सम्पादक अग्निदूत पत्रिका, पं. कुलदीप विद्यार्थी एवं सहयोगी बिजनौर उ.प्र., पं. सूरज आर्य, पं. रोशन, पं. सुशील स्वामी पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री, श्री तापेश्वर कुमार शर्मा अंतरंग सदस्य सभा सहित अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

आर्यसमाज नानकसागर (रानीसागर) में यजुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ सम्पन्न

दिनांक १६ से १७ मार्च २०१६ को दो दिवसीय स्व. श्री रघुनाथ प्रधान जी वानप्रस्थी नानकसागर (रानीसागर) जिला महासमुन्द के प्रथम पुण्य स्मृति में यजुर्वेद शतकम् पारायण महायज्ञ एवं भजनोपदेश का भव्य आयोजन किया गया, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा रहे।

दिनांक १६ मार्च २०१६ को प्रातः ७ बजे से १२ एवं दोपहर ३ से ५ बजे तक आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के सौजन्य से वैदिक भगवत कथा आयोजन किया गया, जिसे पं. कुलदीप विद्यार्थी प्रसिद्ध भजनोपदेशक बिजनौर उ.प्र. का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि ८ से ११ बजे तक भजन एवं प्रवचन प्रमुख रुप से आचार्य अंशुदेव जी, पं. कविन्द्र आर्य एवं साथी भजनोपदेशक, रेडियो सिंगर, बलांगीर (उड़ीसा)। वेदपाठी के रुप में पं. संजय शास्त्री रायपुर, पं. सुशील शास्त्री रायपुर, कांग्रेस साहू पदमपुर, वसुदेव प्रधान सोहेला, टिमनू साहू, पूर्णानन्द भोई (उड़ीसा) उपस्थित रहे।

दिनांक १७ मार्च २०१६ को प्रातः ७ बजे से १२ बजे तक यज्ञ की पूर्णाहुति सम्पन्न की गई, जिसमें यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान मुख्य रुप से उपस्थित रहे। इस

कार्यक्रम के आयोजक स्व. श्री रघुनाथ प्रधान जी वानप्रस्थी के परिजन श्रीमती सुनीति धर्मराज प्रधान, श्रीमती सुषमा रामलाल प्रधान, श्रीमती भारती कमलचंद प्रधान द्वारा आमंत्रित विद्वानों का सम्मान किया गया। पूरे गांव को सजाया गया था और समस्त ग्रामवासी अत्यन्त श्रद्धाभक्ति के साथ हजारों की संख्या में उपस्थित रहे। इस अवसर पर सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान सभा एवं प्रधान आर्यसमाज बैजनाथपारा के साथ अन्य पदाधिकारी, श्री चतुर्भुज कुमार आर्य, श्री दिलीप आर्य कार्यालय मंत्री सहित अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

ग्राम भैंसबोड़ (धमतरी) में दो दिवसीय वैदिक भगवत कथा सम्पन्न

दिनांक १७ एवं १८ मार्च २०१६ को आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं आर्यसमाज मरौद के सौजन्य से ग्राम भैंसबोड़ में वैदिक भगवत कथा का आयोजन किया गया। प्रातः ८.३० से ११.३० बजे एवं सायं ४. से ७ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वैदिक भगवत कथा सम्पन्न हुआ। आमंत्रित विद्वान् के रुप में पं. कुलदीप विद्यार्थी प्रसिद्ध भजनोपदेशक बिजनौर उ.प्र. पं. रोशन आर्य, पं. सुशील स्वामी पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं ढोलवादक के रुप प्रमोद सारथी उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक श्री सोमप्रकाश जी गिरी सभा उपप्रधान रहे, सभा मंत्री एवं आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर के तथा आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर के पदाधिकारी उपस्थित रहे। आयोजक के रुप में सरपंचपति श्री कामता प्रसाद साहू, श्री परमानन्द एवं श्रीमती टेमीन साहू आदि ग्रामवासी की लगभग सहस्र लोगों की उपस्थिति रही। ग्राम भैंसबोड़ के सरपंच महोदया एवं श्री कामताप्रसाद साहू द्वारा यह आश्वासन दिया गया है कि ग्राम भैंसबोड़ में उचित स्थान पर आर्यसमाज मंदिर निर्माण के लिए भूमि आबंटन की जायेगी।

नगर पंचायत भखारा (धमतरी) में दो दिवसीय वैदिक भगवत कथा सम्पन्न

दिनांक १९ एवं २० मार्च २०१६ को सार्वजनिक मंच, भखारा में आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर एवं श्री सोमप्रकाश गिरी उपप्रधान के सौजन्य से वैदिक भगवत कथा का आयोजन किया गया। प्रातः ८.३० से ११.३० बजे एवं सायं ४. से ७ बजे तक यज्ञ, भजन एवं वैदिक भगवत कथा सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रम्हा के रुप में आचार्य कर्मवीर जी सम्पादक अग्निदूत एवं पं. कुलदीप विद्यार्थी एवं सहयोगी बिजनौर उ.प्र., आचार्य जगबन्धु शास्त्री, पं. सूरज आर्य, पं. रोशन, पं. सुशील स्वामी पुरोहित आर्यसमाज बैजनाथपारा रायपुर। कार्यक्रम में सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर के पदाधिकारी श्री तापेश्वर शर्मा, उपस्थित रहे एवं सभा के अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे। नगर पंचायत अध्यक्ष श्री विनोद साहू द्वारा यह आश्वासन दिया गया कि भखारा में उचित स्थान पर आर्यसमाज मंदिर निर्माण के लिए भूमि आबंटन की जायेगी।

- निजी संवाददाता

सभा द्वारा मात्र १० रुपये में 'सत्यार्थ प्रकाश' का विक्रय

सभा द्वारा प्रचार-प्रसार हेतु ३० रुपये के सत्यार्थ प्रकाश को मात्र १० रुपये में विक्रय किया गया। जिसे लोगों ने स्वाध्याय के लिए खरीदा। धमतरी व रायपुर जिले में लगभग ४०० सत्यार्थ प्रकाश का विक्रय किया गया।

पृष्ठ ३१ का शेष - एक शाम-शहीदों के नाम

उ.प्र. के द्वारा अमर शहीदों की गौरवगाथा व्याख्यान एवं संगीत के माध्यम से अत्यन्त प्रभावशाली रहा। मुख्य अतिथि श्री शैलेष पाण्डे जी कुलसचिव डॉ. सी.वी. रमन विश्वविद्यालय कोटा बिलासपुर ने अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की सीमा विषय पर अपना प्रभावशाली उद्‌बोधन दिया, अध्यक्षता श्री किशोर राय जी महापौर नगर पालिक निगम बिलासपुर एवं विशिष्ट अतिथि के रुप में आचार्य अंशुदेव आर्य सभा प्रधान तथा श्री हरदीप खनूजा जी संचालक हरदीप कंस्ट्रक्शन बिलासपुर रहे। आचार्य अंशुदेव जी द्वारा उद्‌बोधन में यह कहा गया कि अमर शहीदों के बलिदान से आजादी मिली है, जिसे हमें सम्हालना हम आर्यवीरों का महती उत्तरदायित्व है। कार्यक्रम के आयोजक आर्य युवा समिति आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर पूरा प्रेक्षागृह खचाखच भरा हुआ था, विभिन्न वाद्य. यंत्रों एवं आर्केस्ट्रा द्वारा वीररस से युक्त कविता प्रस्तुत की गई। सुश्री शालिनी द्वारा अत्यन्त प्रभावशाली गीत प्रस्तुत किया गया। इस कार्यक्रम में विशेष रुप से सभा प्रधान आचार्य अंशुदेव आर्य अपने परिवार सहित, सभा मंत्री श्री दीनानाथ वर्मा, श्री दयाराम वर्मा उपप्रधान, आर्यसमाज कटोरातालाब रायपुर के पदाधिकारी एवं सभा के अन्य पदाधिकारीगण उपस्थित रहे।

- निजी संवाददाता

दलितों व गरीबों को गले लगाना होगा – विनय आर्य

कोटा। समाज को सर्वांगीण विकास व उन्नति की ओर ले जाना है तो हमें मिलकर दलितों व गरीबों को गले लगाना होगा, उन्हें बराबर का दर्जा देकर अपना बनाना होगा तभी देश की उन्नति संभव है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने लगभग १५० वर्ष पूर्व ही कह दिया था मनुष्य में कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब समाज के अंग है जैसे कि शरीर के सब अंग महत्वपूर्ण है। उक्त विचार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमंत्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने कोटा स्टेशन के प्लेटफार्म पर व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज में किसी प्रकार का जाति भेदभाव नहीं है हिन्दू धर्मावलम्बी किसी भी जाति का हो हमारे यहां पूरा सम्मान पाता है। कार्यक्रम में भाग लेकर दिल्ली लौट रहे विनय आर्य का आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा के नेतृत्व में आर्यसमाज की एक टीम ने रेल्वे प्लेटफार्म पर उनका भव्य स्वागत किया तथा आर्यसमाज ने उनके नेतृत्व के लिए आभार व्यक्त किया।

आर्यसमाज जिला सभा कोटा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने विनय आर्य को आश्वासन दिलाया कि कोटा क्षेत्र में आर्यसमाज निरन्तर गतिशील व सेवारत है। हम दलितों व गरीब तबके के लोगों के प्रति और अधिक संवेदनशील होकर कार्य करेंगे। उन्हें समाज की मुख्य धारा में जोड़ने के लिए आर्यसमाज प्रयास करेगा कि उनके हर सामाजिक कार्य में आर्यसमाज उनकी मदद करें, उनके साथ खड़े रहे।

इस अवसर पर दिल्ली सभा के आर्य तथा कोटा के आर्य विद्वान् रामप्रसाद याज्ञिक जिला सभा के प्रचार मंत्री अरविन्द पाण्डेय एवं आर्यसमाज विज्ञाननगर के मंत्री राकेश चड्ढा उपस्थित थे। सर्वप्रथम विनय आर्य एवं संदीप आर्य का गायत्री मंत्र से सुसज्जित केसरिया दुपट्टा ओढ़ाकर व वेद मंत्रोच्चार के साथ स्वागत किया गया।

संवाददाता : अरविन्द पाण्डेय, जिला आर्य प्रति. सभा कोटा

सभा कार्यालय दुर्ग में ऋषि बोधदिवस मनाया गया

दुर्ग। छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय दुर्ग में ऋषि बोध दिवस दि. ७ मार्च २०१६ को मनाया गया, इस अवसर पर वैदिक हवन का कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें सभा के पदाधिकारी व कर्मचारीगण उपस्थित रहे। -निजी संवाददाता

अग्निदूत के ग्राहक सदस्यों की सेवा में

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मासिक मुख पत्र **'अग्निदूत'** के समस्त ग्राहक सदस्यों से निवेदन है कि अपना वार्षिक शुल्क १००/- यथाशीघ्र सभा कार्यालय को भेज दें, जिससे कि उन्हें नियमित रूप से 'अग्निदूत' भेजा जाता रहे। जिन सदस्यों के शुल्क तीन वर्षों से अधिक बकाया हो, उनसे निवेदन है कि वे अपना दसवर्षीय शुल्क ८००/- रु. भेजें। इस कार्य को यथाशीघ्र प्राथमिकता से करें। अन्यथा **इस मास से अग्निदूत भेजना बंद कर दिया जायेगा।** पत्र व्यवहार में अपना सदस्य संख्या तथा पूरा पता पिन कोड सहित अवश्य लिखें। **सभा का भारतीय स्टेट बैंक दुर्ग शाखा में सेविंग एकाऊन्ट नं. : 32914130515 है, जिसमें आप किसी भी भारतीय स्टेट बैंक की शाखा से आनलाईन शुल्क जमा कर सभा कार्यालय के दूरभाष नं. ०७८८-२३२२२२५ द्वारा सूचित करते हुए अलग से पत्र लिखकर अवगत कर सकते हैं। अग्निदूत मासिक पत्रिका के सम्बन्ध में कोई भी शिकायत हो तो कृपया श्रीनारायण कौशिक को चलभाष नं. ९७७०३६८६१३ में सम्पर्क कर सकते हैं।**

– **दीनानाथ वर्मा, मंत्री** मो. ९८२६३६३५७८

कार्यालय पता : 'अग्निदूत', दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग (छ.ग.)491001, फोन : ०७८८-२३२२२२५

अमर शहीदों की याद में आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर द्वारा आयोजित
एक शाम-शहीदों के नाम कार्यक्रम के अवसर पर एवं गणमान्य अतिथिगण

अमर शहीदों की याद में आर्यसमाज गोंड़पारा बिलासपुर द्वारा आयोजित
एक शाम-शहीदों के नाम कार्यक्रम के अवसर पर

अप्रैल 2016

डाक पंजी. छ.ग./ दुर्ग संभाग / 99 / 2015-17

CHH-HIN/2006/17407

प्रेषक :

अग्निदूत, हिन्दी मासिक पत्रिका

कार्यालय, छ.ग.प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग –491001 (छ.ग.)

सेवा में,

श्रीमान

महर्षिदयानन्दसंस्कृतवेदविज्ञानआर्षगुरुकुलम् टाटीबंध-रायपुर-छ.ग.

छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द संस्कृत वेद विज्ञान आर्षगुरुकुलम् टाटीबन्ध रायपुर के शिक्षक–शिक्षिकायें, छात्र–छात्रायें व कर्मचारीगण

सम्पादक प्रकाशक मुद्रक आचार्य अंशुदेव आर्य द्वारा छत्तीसगढ़ प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द परिसर, आर्यनगर, दुर्ग के वैदिक मुद्रणालय से छपवाकर प्रकाशित किया गया ।